नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 200, नई दिल्ली, रविवार 25 अक्टूबर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता केवल मंज़िल तक पहुँचने में नहीं, बल्कि हर दिन स्वयं को पहले से बेहतर बनाने के निरंतर प्रयास में छिपी होती है।

03 सुवर्ण दुर्गा पूजा समिति (पंजी.) द्वारा भव्य दुर्गा पूजा महोत्सव का 25वाँ वर्ष

06 वेस्ट मैनेजमेंट: कचरे से रोजगार और उद्यमिता के नए अवसर

08 डायन बताकर पश्चिम सिंहभूम में 46 वर्षीया महिला की निर्मम हत्या

परिवहन विशेष समाचार पत्र । जनहित-जनकल्याण-जनसूचना विशेष

दिल्ली में गैर-BS6 वाहनों पर 92 दिन का प्रतिबंध!

1 नवंबर 2026 से 31 जनवरी 2027 तक बाहर रजिस्टर्ड वाहनों की एंट्री बैन

AQI 244 पर GRAP-1 लागू, CM रेखा गुप्ता का शीतकालीन एक्शन प्लान - No PUC No Fuel, पार्किंग दोगुनी, 50% WFH

प्रस्तुतकर्ता पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

तथ्य एक नजर में – सत्यापित सरकारी स्रोत से

- अवधि: 1 नवंबर 2026 से 31 जनवरी 2027 तक (कुल 92 दिन), विंटर एक्शन प्लान 28 फरवरी 2027 तक

- आदेश: मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने 20 अक्टूबर 2026 को घोषित किया, CAQM ने 21 अक्टूबर को AQI 244 पर GRAP-1 लागू किया

- कौन प्रभावित: दिल्ली के बाहर रजिस्टर्ड गैर-BS6 वाहन - BS4 और उससे पुराने पेट्रोल (15 वर्ष से पुराने), डीजल (10 वर्ष से पुराने), पुराने कमर्शियल वाहन BS3/BS4 ट्रक, टेम्पो

- छूट किसे: CNG वाहन, इलेक्ट्रिक वाहन (EV), एंबुलेंस, फायर, पुलिस, आपातकालीन सेवा और पर्यावरण विभाग द्वारा अधिसूचित अन्य श्रेणियाँ

- प्रवर्तन: दिल्ली की सीमाओं पर चेकिंग, 500+ पेट्रोल पंपों पर ANPR से PUC जांच, पार्किंग शुल्क MCD में दोगुना (मेट्रो पार्किंग को छूट), MCD कार्यालय 8:30-5:00, दिल्ली सरकार 10:00-6:30, 50% वर्क फ्रॉम होम

विस्तृत विश्लेषण – नियम, कानून, अधिनियम, आदेश

1. कानूनी आधार:

- पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986 की धारा 3 के तहत केंद्र सरकार को प्रदूषण नियंत्रण के लिए निर्देश देने की शक्ति।

- वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) अधिनियम 2021 - दिल्ली-NCR में वायु प्रदूषण नियंत्रण के लिए सर्वोच्च प्राधिकरण, GRAP लागू करने का अधिकार।

- मोटर वाहन अधिनियम 1988 की धारा 115 के तहत राज्य सरकार को प्रदूषण के आधार पर वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने का अधिकार।

- सुप्रीम कोर्ट आदेश: CAQM ने 17 अक्टूबर 2026 की बैठक में SC आदेश के अनुरूप निर्णय लिया कि 1 नवंबर से केवल BS-VI, CNG, LNG, इलेक्ट्रिक मालवाहक वाहनों को ही दिल्ली में प्रवेश मिलेगा



2. GRAP क्या है:

- ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान 4 चरणों में - GRAP-1 (AQI 201-300), GRAP-2 (301-400), GRAP-3 (401-450), GRAP-4 (450+)

- इस बार नई व्यवस्था - हर साल 1 नवंबर से 28 फरवरी तक अनिवार्य विंटर कर्फ्यू, AQI का इंतजार नहीं, पहले से तैयारी। 2023-24 से 2025-26 में इस अवधि में औसत AQI 312-342 रहा।

3. BS6 क्या और क्यों:

- भारत में BS6 मानक 1 अप्रैल 2020 से अनिवार्य, BS4 की तुलना में NOx में 68% और PM में 80% तक कमी। 1 अप्रैल 2020 से पहले खरीदे गए वाहन आमतौर पर BS4 या पुराने।

- दिल्ली में पहले से End-of-Life नियम - पेट्रोल 15 वर्ष, डीजल 10 वर्ष के बाद दिल्ली रजिस्टर्ड वाहनों पर प्रतिबंध। यह नया नियम बाहर के वाहनों के लिए अतिरिक्त है।

4. No PUC No Fuel नियम:

- बिना वैध PUC के पेट्रोल, डीजल, CNG, LPG नहीं मिलेगा। उल्लंघन पर मोटर वाहन अधिनियम के तहत ₹10,000 तक जुर्माना, BS6 उल्लंघन पर ₹20,000 तक जुर्माना और वाहन टो/इम्पाउंड की कार्रवाई।

- 500 पंपों पर ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रीडर (ANPR) से जांच।

5. जनहित में क्या करें:

- यात्रा से पहले अपने वाहन का RC पर BS मानक जांचें, PUC वैध रखें।

- CNG में कन्वर्जन वैध स्टिकर के साथ कराएँ, EV को प्राथमिकता दें।

- कारपूलिंग, मेट्रो, इलेक्ट्रिक बस, अंतिम छोर कनेक्टिविटी का उपयोग करें।

- ट्रांसपोर्टर - 15 दिन के पायलट की मांग AIMGTA ने की है, क्योंकि भारी ट्रकों पर रोक से ट्रांसशिपमेंट लागत बढ़ेगी, जाम बढ़ेगा - प्रशासन से चरणबद्ध लागू करने की अपील।

निष्कर्ष: यह जानकारी मीडिया रिपोर्ट्स पर आधारित है, अंतिम सरकारी अधिसूचना का इंतजार करें। लागू नियम, छूट और शर्तों की पुष्टि परिवहन विभाग, दिल्ली की आधिकारिक वेबसाइट से ही करें। स्वच्छ हवा सबका अधिकार है - हमारी दिल्ली, हमारी जिम्मेदारी।

परिवहन विशेष समाचार पत्र - लर्निंग लाइसेंस विशेष

लर्निंग लाइसेंस परीक्षा फेस ऑथेंटिकेशन से होगी पहचान- अब नहीं चलेगा जुगाड़

अब आवेदन करने वाला ही दे सकेगा परीक्षा, सारथी पोर्टल पर कैमरा निगरानी, फेस ऑथेंटिकेशन और सिक्योर ब्राउजर लागू

— पिंकी कुंडू, सह संपादक, परिवहन विशेष

यह कदम सड़क सुरक्षा की दिशा में बड़ा सुधार है। जब आवेदक खुद नियम सीखकर परीक्षा देगा, तभी दुर्घटनाओं में कमी आएगी।

एजेंट की भूमिका अब क्या? एजेंट केवल फॉर्म भरने में मदद कर सकेंगे, परीक्षा नहीं दे सकेंगे। पकड़े जाने पर आवेदन रद्द और कानूनी कार्रवाई।

तथ्य एक नजर में

- क्या बदलेगा: लर्निंग लाइसेंस की ऑनलाइन परीक्षा में अब फेस ऑथेंटिकेशन अनिवार्य

- कहाँ: सारथी पोर्टल http://sarathi.parivahan.gov.in पर STALL (Sarathi Test for All Learner's Licences) सिस्टम

- तकनीक: Aadhaar आधारित फेस स्कैन + लाइव कैमरा निगरानी + सिक्योर एग्जाम ब्राउजर + IP लिमिट

- उद्देश्य: प्लेसहोल्डर/प्रॉक्सी परीक्षा पर रोक, यातायात नियमों की वास्तविक जानकारी सुनिश्चित करना

मुख्य बिंदु

1. अब जुगाड़ बंद: पहले कई बार आधार OTP लेकर एजेंट या दूसरा व्यक्ति परीक्षा दे देता था, अब लाइव फेस मैच से पहचान सुनिश्चित होगी।

2. 5 प्रयास का नियम: फेस वेरिफिकेशन फेल होने पर अधिकतम 5 प्रयास, फिर RTO जाना पड़ेगा।

3. AI प्रॉक्टर्ड निगरानी: कैमरा पूरे समय चालू, संदिग्ध गतिविधि पर परीक्षा ऑटो रद्द, एक ही सिस्टम/IP से दिन में केवल 2 उम्मीदवार।

4. महाराष्ट्र में सबक: महाराष्ट्र में दुरुपयोग के कारण फेसलेस सेवा अस्थायी रूप से रोकने का प्रस्ताव आया था, क्योंकि आधार डेटा में हेरफेर और प्रॉक्सी टेस्ट के मामले मिले थे।c78f9d1c

नई प्रक्रिया — चरणबद्ध

1. सारथी पर Aadhaar Authentication से आवेदन, OTP सत्यापन

2. लाइव फेस स्कैन — पंजीकृत आधार फोटो से मिलान

3. सिक्योर ब्राउजर में 15-20 MCQ (ट्रैफिक साइन, नियम) — पासिंग 60% (9-12 सही)

4. पास होते ही Form 3 लर्निंग लाइसेंस PDF तुरंत डाउनलोड।



टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार



पिंकी कुंडू

1 जनवरी 2027 से मैसेजिंग ऐप्स के लिए SIM Binding लागू होगी

दूरसंचार विभाग (DoT) ने भारतीय मोबाइल नंबरों का उपयोग करने वाली ऐप-आधारित संचार सेवाओं के लिए SIM Binding अनिवार्य कर दी है। इसके तहत उपयोगकर्ताओं के अकाउंट को एक सक्रिय एवं KYC-सत्यापित SIM/eSIM से लगातार जुड़ा रहना होगा। इस कदम का उद्देश्य साइबर धोखाधड़ी, डिजिटल अरेस्ट, फिशिंग, प्रतिरूपण (Impersonation) और भारतीय मोबाइल नंबरों के दुरुपयोग को रोकना है।

प्रमुख तिथियाँ

- 28 नवम्बर 2025: DoT द्वारा SIM Binding संबंधी निर्देश जारी किए गए।

- 31 दिसम्बर 2026: मैसेजिंग प्लेटफॉर्म्स के लिए अनुपालन (Compliance) की अंतिम तिथि।

- 1 जनवरी 2027: SIM Binding नियमों के लागू होने की संभावित तिथि।

SIM Binding क्या है?

SIM Binding एक सुरक्षा व्यवस्था है, जिसके अंतर्गत मैसेजिंग अकाउंट को उस SIM कार्ड से निरंतर जुड़ा रखना होगा जिसका उपयोग अकाउंट पंजीकरण (Registration) के समय किया गया था। वर्तमान व्यवस्था के विपरीत, सत्यापन केवल एक बार की प्रक्रिया नहीं रहेगा।

प्रमुख आवश्यकताएँ

- पंजीकृत मोबाइल नंबर एक सक्रिय SIM/eSIM से जुड़ा होना चाहिए।

- SIM उसी डिवाइस में मौजूद होनी चाहिए जिस पर ऐप का उपयोग किया जा रहा है।

- SIM हटाने, निष्क्रिय होने या बदलने पर अकाउंट की पहुँच सीमित हो सकती है।

प्रभावित ऐप्स

- WhatsApp
- Telegram
- Signal
- Snapchat
- JioChat
- ShareChat
- Josh
- Arattai

उपयोगकर्ताओं पर प्रभाव

- पंजीकृत SIM हटाने या निष्क्रिय होने पर अकाउंट काम करना बंद कर सकता है।



- पंजीकृत SIM के बिना केवल Wi-Fi पर ऐप का उपयोग प्रतिबंधित हो सकता है।

- Web, Tablet और Desktop जैसे मल्टी-डिवाइस उपयोगकर्ताओं को अतिरिक्त सत्यापन का सामना करना पड़ सकता है।

- विदेश में रहने वाले भारतीय उपयोगकर्ताओं को अपनी पंजीकृत SIM/eSIM सक्रिय रखनी पड़ सकती है।

संभावित लाभ

- मैसेजिंग अकाउंट्स की बेहतर ट्रेसबिलिटी।

- सीमा-पार (Cross-Border) साइबर धोखाधड़ी में कमी।

- साइबर अपराध जांच में कानून प्रवर्तन एजेंसियों को बेहतर सहायता।

- भारतीय दूरसंचार पहचानकर्ताओं (Telecom Identifiers) के दुरुपयोग की रोकथाम।

1 जनवरी 2027 से WhatsApp, Telegram, Signal तथा अन्य अधिसूचित मैसेजिंग प्लेटफॉर्म्स का उपयोग जारी रखने के लिए उपयोगकर्ताओं को अपनी पंजीकृत KYC-सत्यापित SIM/eSIM को सक्रिय एवं डिवाइस से लिंक रखना पड़ सकता है। यह पहल भारत के डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में जवाबदेही, साइबर सुरक्षा और धोखाधड़ी-निवारण को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।



खाना पकाने के लिए कौन-से बर्तन स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित हैं? जानिए!

पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

सही भोजन जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी है खाना पकाने के बर्तनों का सही चुनाव ! हम रोज क्या खाते हैं, कितना तेल और नमक इस्तेमाल करते हैं, इस पर ध्यान देते हैं लेकिन खाना पकाने के लिए इस्तेमाल होने वाले बर्तनों की गुणवत्ता पर अक्सर ध्यान नहीं देते।

वैज्ञानिक दृष्टि से क्या जानना जरूरी है ? बर्तनों की सामग्री, उन पर लगी परत, खाना पकाने का तापमान और भोजन में मौजूद अम्लता के आधार पर बर्तनों से कुछ पदार्थ भोजन में मिल सकते हैं। इसलिए बर्तनों का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए।

आइए, जानते हैं विभिन्न प्रकार के बर्तनों की विशेषताएँ!

1. स्टेनलेस स्टील के बर्तन

1. टिकाऊ होते हैं और साफ करना आसान होता है।

2. सब्जी, दाल, करी और अन्य व्यंजन बनाने के लिए उपयोगी हैं।

3. अच्छी गुणवत्ता वाले स्टेनलेस स्टील के बर्तनों से भोजन में धातुओं के मिलने की मात्रा सामान्यतः कम होती है।

4. अच्छी गुणवत्ता वाले बर्तन चुनें।

5. निकेल से एलर्जी वाले लोगों को बर्तन चुनते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

2. काँच के बर्तन

1. भोजन रखने के लिए अच्छा विकल्प हैं।

2. उपयुक्त गुणवत्ता वाले काँच से बने बर्तनों में भोजन के साथ रासायनिक प्रतिक्रिया होने की संभावना कम होती है।

3. कुछ विशेष प्रकार के काँच के बर्तन भोजन गर्म करने के लिए भी उपयोग किए जा सकते हैं।

4. हर काँच का बर्तन गैस की सीधी आँच या ओवन में इस्तेमाल करने योग्य नहीं होता।

5. निर्माता के निर्देशों का पालन करें।

3. ढलवाँ लोहे के बर्तन

1. डोसा, चीला और सब्जियाँ बनाने के लिए उपयोगी हैं।

2. खाना पकाने के दौरान भोजन में कुछ मात्रा में लोहा मिल सकता है।

3. उचित देखभाल करने पर लंबे समय तक चलते हैं।

4. खट्टे पदार्थ पकाने या लंबे समय तक रखने से भोजन में लोहे की मात्रा बढ़ सकती है।

5. इस्तेमाल के बाद बर्तनों को अच्छी तरह साफ करके सुखाएँ।

4. सिरेमिक के बर्तन

1. भोजन परोसने और रखने के लिए उपयोगी हैं।

2. भोजन के संपर्क में इस्तेमाल के लिए सुरक्षित घोषित किए गए बर्तन चुनें।

3. खराब गुणवत्ता वाली या अनुचित चमकदार परत वाले कुछ सिरेमिक बर्तनों से सीसा या कैडमियम जैसे हानिकारक धातु भोजन में मिल सकते हैं।

5. एल्युमिनियम के बर्तन

1. हल्के होते हैं और गर्मी को अच्छी तरह फैलाते हैं।

2. उचित तरीके से इस्तेमाल करने पर खाना पकाने के लिए उपयोगी हैं।

3. खट्टे या नमकीन पदार्थों को लंबे समय तक पकाने या रखने से भोजन में एल्युमिनियम मिलने की मात्रा बढ़ सकती है।

4. अच्छी गुणवत्ता वाले और सही स्थिति में मौजूद बर्तनों का उपयोग करें।

6. नॉन-स्टिक बर्तन

1. कम तेल में खाना बनाने में मदद करते हैं।

2. भोजन के बर्तन में चिपकने की संभावना कम होती है।

3. खाली बर्तन को बहुत अधिक गर्म न करें।

4. निर्माता द्वारा बताई गई तापमान सीमा का पालन करें।

5. यदि बर्तन की परत उखड़ने लगे या बर्तन बुरी तरह खराब हो जाए, तो उसे बदलने पर विचार करें।

7. प्लास्टिक के बर्तन

1. कुछ प्रकार के प्लास्टिक के डिब्बे सूखा या ठंडा भोजन रखने के लिए उपयोगी होते हैं।

2. हर प्लास्टिक का डिब्बा गर्म भोजन या माइक्रोवेव में इस्तेमाल करने के लिए सुरक्षित नहीं होता।

3. केवल उन्हीं डिब्बों का उपयोग करें जिन पर संबंधित उपयोग के लिए सुरक्षित होने का स्पष्ट उल्लेख हो।

4. क्षतिग्रस्त डिब्बों को बदल दें।

स्वस्थ भोजन बनाने के लिए अपनाएँ ये 7 आदतें !

1. अच्छी गुणवत्ता वाले और भोजन के लिए सुरक्षित बर्तन चुनें।

2. बर्तनों के इस्तेमाल से जुड़े निर्देशों का पालन करें।

3. खाली नॉन-स्टिक बर्तन को अत्यधिक गर्म न करें।

4. खट्टे पदार्थों को अनुपयुक्त धातु के बर्तनों में लंबे समय तक न रखें।

5. बर्तनों की परत खराब होने पर उनकी जाँच करें और आवश्यकता पड़ने पर बदलें।

6. प्लास्टिक के डिब्बों का उपयोग केवल निर्धारित उद्देश्य के लिए करें।

7. खाना पकाने के बर्तनों को साफ और अच्छी स्थिति में रखें।

याद रखें ! हर प्रकार के भोजन को पकाने के लिए कोई एक बर्तन हमेशा सबसे अच्छा हो, यह जरूरी नहीं है। बर्तन की गुणवत्ता, उसका सही उपयोग, साफ-सफाई और खाना पकाने का तरीका अधिक महत्वपूर्ण हैं।

सही जानकारी अपनाएँ, स्वस्थ आदतें बनाएँ और अपने परिवार के स्वास्थ्य का ध्यान रखें !

स्वस्थ शरीर ही जीवन की सच्ची संपत्ति है ! आइए, अपने स्वास्थ्य की रक्षा करें, सही जानकारी का प्रसार करें और एक स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान दें।



डायबिटीज़ (शुगर) में इन बातों का विशेष ध्यान रखें!



पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

डायबिटीज़ को नियंत्रित रखने के लिए दवाइयाँ महत्वपूर्ण हैं, लेकिन सावधानी भी उतनी ही ज़रूरी है !

डॉक्टर की सलाह के बिना दवाइयों की खुराक बढ़ाना या गलत तरीके से लेना नुकसानदायक हो सकता है।

डायबिटीज़ की दवाइयों के संभावित दुष्प्रभाव

1. रक्त में शुगर का बहुत कम होना (Hypoglycemia)

1. चक्कर आना
2. पसीना आना
3. हाथों का काँपना
4. गंभीर स्थिति में बेहोशी

यह स्थिति खतरनाक हो सकती है और तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

2. पेट संबंधी समस्याएँ

1. जी मिचलाना या उल्टी
2. दस्त लगना
3. पेट में दर्द

कुछ दवाइयों, जैसे मेटफॉर्मिन (Metformin), से ये समस्याएँ हो सकती हैं।

3. वजन बढ़ना कुछ डायबिटीज़ की दवाइयों और इंसुलिन के कारण वजन बढ़ सकता है।

4. किडनी की समस्या किडनी की कार्यक्षमता कम होने पर कुछ दवाइयों की खुराक बदलनी पड़ सकती है। इसलिए नियमित जाँच और डॉक्टर की सलाह ज़रूरी है।

5. लिवर पर प्रभाव कुछ दवाइयाँ लिवर को प्रभावित कर सकती हैं। आवश्यकता के अनुसार डॉक्टर लिवर की जाँच कराने की सलाह दे सकते हैं।

6. विटामिन B12 की कमी लंबे समय तक मेटफॉर्मिन लेने से कुछ लोगों में विटामिन B12 की कमी हो सकती है।

इसके कारण कमजोरी, थकान और हाथ-पैरों में झनझनाहट हो सकती है।

7. हृदय संबंधी सावधानी कुछ दवाइयों के दुष्प्रभाव व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति और अन्य दवाइयों पर निर्भर करते हैं। इसलिए उपचार हमेशा डॉक्टर की सलाह से करें।

डायबिटीज़ में क्या सावधानियाँ रखें ?

1. डॉक्टर की सलाह के बिना दवा की खुराक न बढ़ाएँ।
2. निर्धारित समय पर दवाइयाँ लें।
3. नियमित रूप से ब्लड शुगर की जाँच करें।
4. संतुलित आहार लें और नियमित शारीरिक गतिविधि करें।
5. डॉक्टर की सलाह के अनुसार HbA1c और किडनी की जाँच कराएँ।

महत्वपूर्ण सलाह

1. डायबिटीज़ की दवाइयाँ अपनी मर्ज़ी से अचानक बंद न करें।
2. निर्धारित मात्रा से अधिक दवा न लें।

उपचार में कोई भी बदलाव करने से पहले डॉक्टर से सलाह लें।

त्योहारों के पकवानों में रसायन: मानव स्वास्थ्य के साथ खतरनाक खिलवाड़

डॉ. विजय गर्ग

त्योहार खुशी, आपसी मेल-जोल, उदारता और उत्सव के अवसर होते हैं। भारत में मिठाइयाँ, नमकीन और पारंपरिक व्यंजन इन उत्सवों का अभिन्न हिस्सा हैं। परिवार एक-दूसरे को मिठाइयों के डिब्बे भेंट करते हैं, घरों में विशेष पकवान बनाए जाते हैं और मेहमानों का स्वागत स्वादिष्ट भोजन से किया जाता है। लेकिन त्योहारों पर सजे रंग-बिरंगे पकवानों के पीछे एक गंभीर चिंता भी बढ़ रही है—खाद्य पदार्थों में मिलावट और रसायनों का अनुचित इस्तेमाल। कृत्रिम रंग, अनधिकृत परिरक्षक, दूषित सामग्री और हानिकारक मिलावटी पदार्थ त्योहारों के पकवानों को स्वास्थ्य के लिए खतरा बना सकते हैं। जो भोजन खुशियाँ बाँटने के लिए बनाया जाता है, वही बीमारी का कारण नहीं बनना चाहिए।

खाद्य पदार्थों में मिलावट की बढ़ती समस्या

दीवाली, होली, दशहरा और अन्य क्षेत्रीय त्योहारों के दौरान मिठाइयों, दूध से बने उत्पादों, खाद्य तेलों, मसालों और पैकेटबंद खाद्य पदार्थों की माँग तेजी से बढ़ जाती है। इस माँग को पूरा करने और अधिक मुनाफा कमाने के लिए कुछ बेईमान व्यापारी गुणवत्ता और सुरक्षा से समझौता कर सकते हैं।

दूध और उससे बने उत्पादों में मिलावट की आशंका विशेष रूप से रहती है। खोया, पनीर, घी और अन्य दुग्ध उत्पाद घटिया सामग्री या अनधिकृत पदार्थों से तैयार किए जा सकते हैं अथवा बेचे जा सकते हैं। मिठाइयों को अधिक चमकदार और आकर्षक बनाने के लिए उनमें कृत्रिम रंग मिलाए जा सकते हैं। निम्न गुणवत्ता वाले खाद्य तेल, मिलावटी मसाले और अनुचित ढंग से रखी गई सामग्री भी खाद्य सुरक्षा को प्रभावित कर सकती है।

हालाँकि, हर सस्ता उत्पाद या चमकीले रंग की मिठाई असुरक्षित नहीं होती। फिर भी उपभोक्ताओं को सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि आकर्षक रूप और अच्छा स्वाद शुद्धता की गारंटी नहीं हैं। कई बार उचित प्रयोगशाला जाँच के बिना खाद्य पदार्थों में मिलावट की पहचान करना कठिन होता है।

मिठाइयों और त्योहारों के पकवानों में रसायन

खाद्य उद्योग में ताजगी बनाए रखने, बनावट सुधारने, स्वाद बढ़ाने और आकर्षक रूप बनाए रखने के लिए खाद्य योजकों का इस्तेमाल किया जाता है। कई स्वीकृत खाद्य योजक निर्धारित कानूनी सीमाओं के भीतर इस्तेमाल किए जाने पर सुरक्षित होते हैं। वास्तविक खतरा तब पैदा होता है, जब निर्माता या विक्रेता प्रतिबंधित रसायनों का उपयोग करते हैं, निर्धारित सीमा से अधिक मात्रा मिलाते हैं या उत्पादों में इस्तेमाल की गई वास्तविक सामग्री को छिपाते हैं।

कुछ गैर-अनुमत औद्योगिक रंगों का अवैध रूप से मिठाइयों, मसालों, सॉस और अन्य खाद्य पदार्थों को रंगने के लिए उपयोग किया जा सकता है। इनमें से कुछ पदार्थ स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकते हैं। इसी तरह, परिरक्षकों का दुरुपयोग या दूध से बने उत्पादों में अनुपयुक्त रसायनों का मिश्रण उपभोक्ताओं के लिए नुकसानदेह हो सकता है।

कृषि उत्पादों में कीटनाशकों के अवशेष, दूषित सामग्री में भारी धातुएँ और अनुपयुक्त पैकेजिंग से भोजन में रसायनों का पहुँचना भी चिंता के विषय हैं। गलत तरीके से भंडारण और अस्वच्छ परिस्थितियों में भोजन तैयार करने से सूक्ष्मजीवों द्वारा संदूषण भी हो सकता है। यह रासायनिक मिलावट से अलग, लेकिन उतनी ही महत्त्वपूर्ण खाद्य सुरक्षा की समस्या है।

स्वीकृत खाद्य योजकों के उचित इस्तेमाल और खतरनाक पदार्थों के अवैध



उपयोग के बीच अंतर समझना आवश्यक है। खाद्य उत्पादन में वैज्ञानिक मानकों, पारदर्शी लेबलिंग और खाद्य सुरक्षा नियमों का कड़ाई से पालन होना चाहिए।

दूषित भोजन से स्वास्थ्य को खतरे

दूषित भोजन के सेवन से होने वाले स्वास्थ्य संबंधी नुकसान इस बात पर निर्भर करते हैं कि कौन-सा पदार्थ मौजूद है, उसकी कितनी मात्रा शरीर में गई है और कितने समय तक उसके संपर्क में रहा गया है। कुछ जहरीले रसायनों के संपर्क में आने से मतली, उल्टी, पेट दर्द, चक्कर आना और विषाक्तता के अन्य लक्षण हो सकते हैं। गंभीर मामलों में तत्काल चिकित्सा सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है।

कुछ हानिकारक दूषित पदार्थों, जैसे भारी धातुओं और कीटनाशकों के लगातार संपर्क में रहने से तंत्रिका तंत्र, गुर्दों या यकृत को नुकसान पहुँच सकता है। कुछ पदार्थ प्रजनन संबंधी समस्याओं, विकास पर प्रतिकूल प्रभाव या विशेष प्रकार के कैंसर के बढ़ते जोखिम से भी जुड़े पाए गए हैं। हालाँकि, अलग-अलग रसायनों के खतरे अलग होते हैं और किसी खाद्य पदार्थ में अवशेष की मौजूदगी अपने आप यह साबित नहीं करती कि उसे खाने से बीमारी अवश्य होगी।

खराब स्वच्छता, असुरक्षित पानी, पर्याप्त प्रशीतन की कमी या अनुचित भंडारण के कारण बैक्टीरिया और अन्य सूक्ष्मजीवों से होने वाले खाद्यजनित संक्रमण भी फैल सकते हैं। कभी-कभी ऐसे संक्रमणों को रसायनों का प्रभाव समझ लिया जाता है, जबकि वास्तविक कारण सूक्ष्मजीवों से हुआ संदूषण होता है।

बच्चे, बुजुर्ग, गर्भवती महिलाएँ और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग कुछ खाद्य जोखिमों के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं। इसलिए खाद्य सुरक्षा को केवल उपभोक्ता की पसंद का विषय नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य की प्राथमिकता माना जाना चाहिए।

खाद्य कारोबारियों और अधिकारियों की जिम्मेदारी

खाद्य सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी उपभोक्ताओं पर नहीं डाली जा सकती। खाद्य निर्माता, मिठाई की दुकानों के मालिक, थोक व्यापारी, खुदरा विक्रेता और नियामक संस्थाएँ—सभी की इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

खाद्य कारोबारियों को विश्वसनीय आपूर्तिकर्ताओं से सामग्री खरीदनी चाहिए, परिसर को स्वच्छ रखना चाहिए, जल्दी खराब होने वाले खाद्य पदार्थों को उचित तापमान पर संग्रहित करना चाहिए और केवल स्वीकृत सामग्री तथा खाद्य योजकों का उपयोग करना चाहिए। जहाँ आवश्यक हो, उत्पादों पर सही लेबल, निर्माण संबंधी विवरण और समाप्ति तिथि या उपयोग की अंतिम तिथि स्पष्ट रूप से लिखी जानी चाहिए।

खाद्य सुरक्षा अधिकारियों को नियमित निरीक्षण करना चाहिए, नमूने एकत्र करने चाहिए और मिठाइयों, दुग्ध उत्पादों, खाद्य तेलों, मसालों तथा अन्य मिलावट की आशंका वाले खाद्य पदार्थों की प्रयोगशालाओं में जाँच करवानी चाहिए। असुरक्षित उत्पाद बनाने या बेचने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। ऐसी सार्वजनिक शिकायत प्रणालियाँ भी होनी चाहिए, जिनके माध्यम से उपभोक्ता संदिग्ध मिलावट की सूचना आसानी से दे सकें।

भारत में भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI), राज्य और स्थानीय खाद्य सुरक्षा अधिकारियों के साथ मिलकर खाद्य सुरक्षा मानकों को निर्धारित करने और लागू करवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन मानकों का प्रभावी क्रियान्वयन सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिए आवश्यक है, विशेषकर त्योहारों के दौरान जब खाद्य पदार्थों की माँग बढ़ जाती है।

उपभोक्ता स्वयं को कैसे सुरक्षित रखें?

कुछ व्यावहारिक सावधानियाँ अपनाकर उपभोक्ता खाद्य पदार्थों से जुड़े अनावश्यक जोखिमों को कम कर सकते हैं।

- मिठाइयाँ और अन्य त्योहारों के पकवान विश्वसनीय तथा लाइसेंस प्राप्त दुकानों से खरीदें।

- पैकेटबंद उत्पादों की पैकेजिंग, सामग्री की सूची, निर्माण संबंधी विवरण और समाप्ति तिथि जाँचें।

- क्षतिग्रस्त पैकेट, असामान्य गंध, संदिग्ध बनावट या अनुचित भंडारण के संकेत वाले खाद्य पदार्थों से बचें।

- फलों और सब्जियों को इस्तेमाल करने से पहले स्वच्छ बहते पानी में अच्छी तरह धोएँ।

- दूध से बने उत्पादों और जल्दी खराब होने वाले भोजन को उचित तापमान पर फ्रिज में रखें। असुरक्षित परिस्थितियों में लंबे समय तक रखे भोजन का सेवन न करें।

- मिठाइयाँ और पकवान उचित मात्रा में खरीदें, ताकि उन्हें लंबे समय तक संग्रहित न करना पड़े।

- मिलावट का संदेह होने पर संबंधित खाद्य सुरक्षा अधिकारियों को इसकी सूचना दें।

उपभोक्ताओं को घरेलू रंग परीक्षणों या इंटरनेट पर फैली अफवाहों को मिलावट का निर्णायक प्रमाण नहीं मानना चाहिए। कुछ खतरनाक दूषित पदार्थों की पहचान केवल रंग, गंध या स्वाद से नहीं की जा सकती। उनकी विश्वसनीय पहचान के लिए विशेष प्रयोगशाला परीक्षण आवश्यक हो सकते हैं।

यदि संदिग्ध दूषित भोजन खाने के बाद किसी व्यक्ति में गंभीर लक्षण दिखाई दें, तो उसे तुरंत चिकित्सा सहायता लेनी चाहिए और चिकित्सक को खाए गए भोजन के बारे में जानकारी देनी चाहिए।

जिम्मेदारी के साथ मनाएँ त्योहार

त्योहारों का उद्देश्य खुशियाँ, स्वास्थ्य और सामाजिक सद्भाव बढ़ाना है। भोजन को लेकर अत्यधिक भय उत्सव का आनंद कम कर सकता है, लेकिन खाद्य सुरक्षा की अनदेखी के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। जागरूकता, सोच-समझकर खरीदारी और भोजन तैयार करने के सुरक्षित तरीकों से परिवार निश्चिंत होकर त्योहार मना सकते हैं।

स्कूल, कॉलेज, सामाजिक संगठन और मीडिया खाद्य मिलावट, सुरक्षित भंडारण, पोषण तथा उपभोक्ता अधिकारों के बारे में लोगों को जागरूक कर सकते हैं। मिठाई निर्माताओं और दुकानदारों को समझना चाहिए कि जनता का विश्वास अल्पकालिक मुनाफे से अधिक मूल्यवान है। सुरक्षित सामग्री, सही लेबलिंग और स्वच्छ उत्पादन कोई वैकल्पिक सुविधा नहीं, बल्कि अनिवार्य जिम्मेदारियाँ हैं।

सरकारों को निरीक्षण व्यवस्था मजबूत करनी चाहिए, प्रयोगशालाओं की क्षमता बढ़ानी चाहिए और जानबूझकर मिलावट करने वालों के विरुद्ध दंडात्मक प्रावधानों को प्रभावी ढंग से लागू करना चाहिए। साथ ही, किसानों और खाद्य उत्पादकों को सुरक्षित कृषि पद्धतियों, उचित भंडारण और गुणवत्ता नियंत्रण के बारे में मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

त्योहारों की असली मिठास केवल मिठाइयों और पकवानों में नहीं, बल्कि उन्हें मनाने वाले लोगों के स्वास्थ्य, खुशी और कल्याण में निहित है। खाद्य पदार्थों में मिलावट और रसायनों का अवैध इस्तेमाल लोगों को अनावश्यक स्वास्थ्य जोखिमों में डालकर त्योहारों की भावना को कमजोर करता है। त्योहारों के खाद्य पदार्थों को शुद्ध, पौष्टिक और सुरक्षित बनाने के लिए उपभोक्ताओं, खाद्य कारोबारियों, वैज्ञानिकों और सरकारी अधिकारियों के सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है।

आइए, हमारे त्योहारों की पहचान मिठास से हो, असुरक्षित भोजन से होने वाली पीड़ा से नहीं। त्योहारों के पकवानों की शुद्धता की रक्षा करना हम सभी की साझा जिम्मेदारी है और स्वस्थ समाज की दिशा में एक आवश्यक कदम भी।

आज है कोजागर व्रत: रात में जागकर होगी मां लक्ष्मी की आराधना, खीर में बरसेगा अमृत



शरद पूर्णिमा 25 अक्टूबर को, निशिता काल में पूजा का विशेष महत्व

परिवहन विशेष संवाददाता, गोरखपुर।

आश्विन मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला कोजागर व्रत आज 25 अक्टूबर, रविवार को है। इसे कोजागरी पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा, कौमुदी व्रत और रास पूर्णिमा भी कहा जाता है। इस रात देवी लक्ष्मी और चंद्रमा की पूजा की जाती है। मान्यता है कि मां लक्ष्मी रात में पृथ्वी पर भ्रमण कर देखती हैं कि कौन जाग रहा है। इसलिए इसे 'को जागर्ति' यानी कौन जाग रहा है, से कोजागर कहा गया। जो जागकर आराधना करता है, उसे मां धन-धान्य से संपन्न करती हैं। इस वर्ष मुख्य पूजन का निशिता काल रात 11:39 बजे से 12:30 बजे तक रहेगा।

कथा के अनुसार एक साहूकार की दो बेटियां शरद पूर्णिमा का व्रत रखती थीं। बड़ी बेटी पूर्ण निष्ठा से व्रत करती थी, जबकि छोटी अधूरा छोड़ देती थी। अधूरे व्रत के कारण छोटी के बच्चे जन्म लेते ही मर जाते थे, जबकि बड़ी का परिवार सुखी था। एक दिन छोटी के मृत बच्चे पर बड़ी बहन के स्पर्श से बच्चा जीवित हो उठा। बड़ी बहन ने कहा यह कोजागर व्रत के पूर्ण पुण्य का प्रताप है। तब से छोटी ने भी विधि-विधान से व्रत किया और उसके कष्ट दूर हो गए।

Vediccodes
VASTU • NUMEROLOGY • ASTROLOGY
आपके दिन की शुरुआत, पारुल भटनागर के साथ
विशेषज्ञ एस्ट्रो न्यूमेरो वास्तु कंसल्टेंट
परिवहन विशेष News

धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मजबूत बनाइए रिश्ते

25 अक्टूबर 2026 | दिन का अंक: 9 — पूर्णता, करुणा, साहस, परिवर्तन और मुक्ति

मूलांक 1

धन व करियर: दिन का अंक 9 आपकी नेतृत्व ऊर्जा में उद्देश्य और पूर्णता जोड़ता है। अगला बड़ा कदम शुरू करने से पहले महत्वपूर्ण काम पूरा करें, लंबित भुगतान निपटाएं या पुराने पेशेवर विषय को बंद करें।
रिश्ते: आपकी सीधी प्रकृति पुराने विषय को सुलझाने में मदद कर सकती है, यदि सही साबित होने के बजाय संवेदनशीलता चुनी जाए। सच्ची माफी या स्वीकारोक्ति तनाव कम कर सकती है।
सावधानी: अहंकार की टकराहट, नाटकीय निर्णय और ताकत या उदारता दिखाने के लिए खर्च से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक अधूरा विषय गरिमा के साथ पूरा करें और परिपक्वता से नेतृत्व करें।

मूलांक 2

धन व करियर: दिन 9 आपकी संवेदनशीलता और अंतर्ज्ञान को बढ़ाता है। लंबित साझेदारी या धन संबंधी विषय को समाप्त करने की जरूरत हो सकती है; भावनात्मक निर्णय से पहले तथ्य जांचें।
रिश्ते: पुरानी भावनाएं सामने आ सकती हैं। निराशा मन में रखने के बजाय क्षमा और ईमानदार बातचीत का उपयोग करें।
सावधानी: अपराधबोध में खर्च, भावनात्मक निर्भरता और बिना रचनात्मक उद्देश्य पुराने मुद्दे खोलने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक भावनात्मक बोझ छोड़ें और अपनी स्पष्ट व्यक्तिगत सीमा बनाए रखें।

मूलांक 3

धन व करियर: दिन 9 आपकी रचनात्मक ऊर्जा को अर्थपूर्ण दिशा देता है। प्रस्तुति पूरी करें, उपयोगी काम प्रकाशित करें या केवल ध्यान पाने के बजाय बड़े उद्देश्य के लिए संवाद का उपयोग करें।
रिश्ते: आज गर्मजोशी भरे शब्द उपचार कर सकते हैं। प्रशंसा व्यक्त करें या गलतफहमी दूर करें, लेकिन भावनाओं को अनावश्यक नाटक न बनाएं।
सावधानी: बिखरी प्रतिबद्धताएं, सामाजिक खर्च और भावुक क्षण में बड़े वादे करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अपनी रचनात्मकता से ऐसा काम पूरा करें जो वास्तव में महत्वपूर्ण हो।

मूलांक 4

धन व करियर: दिन 9 आपकी व्यावहारिक प्रकृति को लंबित काम पूरा करने को कहता है। खातों को व्यवस्थित करें, पुराना दायित्व समाप्त करें और नई व्यवस्था बनाने से पहले अनुपयोगी सिस्टम हटाएं।
रिश्ते: आप समस्याएं ठीक करना चाह सकते हैं, लेकिन कुछ स्थितियों में समाधान से अधिक समझ जरूरी है। तुरंत नियम या सलाह देने के बजाय भावनाओं के लिए जगह दें।
सावधानी: कठोरता, पुरानी नाराजगी और ऐसी जिम्मेदारियां ढोने से बचें जिन्हें अब छोड़ देना चाहिए।
दिन बेहतर बनाएं: एक व्यावहारिक लंबित काम पूरा करें और एक पुरानी अपेक्षा छोड़ें।

मूलांक 5

धन व करियर: दिन 9 आपकी तेज ऊर्जा को दिशा बदलने से पहले अधूरा काम पूरा करने को कहता है। वादा किया संवाद करें और नए आकर्षण के कारण उपयोगी अवसर बीच में न छोड़ें।
रिश्ते: आप जल्दी आगे बढ़ना चाह सकते हैं, जबकि सामने वाले को समापन चाहिए। विषय को सम्मान से पूरा करने के लिए बातचीत को पर्याप्त समय दें।
सावधानी: अचानक छोड़ना, लापरवाह खर्च और असहज भावनाओं से बचने के लिए नई चीजों में भागने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अगले अनुभव से पहले एक वादा पूरा करें।

मूलांक 6

धन व करियर: दिन 9 आपकी देखभाल की प्रकृति को सेवा और पूर्णता से जोड़ता है। परिवार या क्लाइंट की जिम्मेदारियों की समीक्षा करें, लंबित खर्च निपटाएं और वहीं सहयोग दें जहां वास्तविक मूल्य बने।
रिश्ते: करुणा मजबूत रहेगी और क्षमा आसान हो सकती है। प्यार करें, लेकिन देखभाल को दूसरे व्यक्ति का पूरा भावनात्मक बोझ उठाना न बनाएं।
सावधानी: जरूरत से ज्यादा देने, आराम के लिए खर्च और अपराधबोध में अस्वस्थ पैटर्न बनाए रखने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: समझदारी से दें, उचित जगह क्षमा करें और अपना संतुलन सुरक्षित रखें।

मूलांक 7

धन व करियर: दिन 9 आपकी विश्लेषणात्मक प्रकृति में चिंतन और समापन को समर्थन देता है। शोध पूरा करें, अनुपयोगी चीजें हटाएं और स्पष्ट नई रणनीति के लिए जगह बनाएं।
रिश्ते: पुरानी यादें या अधूरी भावनाएं लौट सकती हैं। उनसे सीखें, जरूरत हो तो संवाद करें और चुप्पी में पूरी तरह पीछे न हटें।
सावधानी: अत्यधिक विश्लेषण, अलगाव और समाप्त हो चुके विषय को बार-बार जांचने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: सीख अपने पास रखें, मानसिक अव्यवस्था छोड़ें और हल्के होकर आगे बढ़ें।

मूलांक 8

धन व करियर: दिन 9 आपकी महत्वाकांक्षी ऊर्जा को शक्ति का जिम्मेदार उपयोग करने को कहता है। आर्थिक दायित्व पूरे करें, पेशेवर विवाद सुलझाएं या संसाधन दीर्घकालिक मूल्य वाले काम में लगाएं।
रिश्ते: आज नियंत्रण से अधिक करुणा उपयोगी है। दबाव के बजाय न्यायपूर्ण और परिपक्व बातचीत तनाव को बेहतर ढंग से सुलझा सकती है।
सावधानी: शक्ति संघर्ष, बदले की भावना में खर्च और केवल अपनी बात साबित करने के लिए विवाद पकड़े रखने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक महत्वपूर्ण विषय निष्पक्षता से पूरा करें और अपनी शक्ति रचनात्मक रूप से उपयोग करें।

मूलांक 9

धन व करियर: आपके मूलांक 9 और दिन के अंक 9 की ऊर्जा एक-दूसरे को बहुत मजबूत करती है। साहस, करुणा, पूर्णता और परिवर्तन की ऊर्जा बढ़ेगी। बड़े लंबित विषय पूरे करें और अनावश्यक नई शुरुआत के बजाय नए चक्र के लिए जगह बनाएं।
रिश्ते: भावनाएं तीव्र हो सकती हैं, लेकिन उपचार संभव है। जिसे छोड़ा जा सकता है उसे क्षमा करें, ईमानदारी से बोलें और पुराने अस्वस्थ पैटर्न को दोहराने से स्वयं को बचाएं।
सावधानी: क्रोध, आवेग में उदारता, भावनात्मक नाटक और सबकी समस्या अपनी मान लेने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: पूरा करें, क्षमा करें और आगे आने वाली नई ऊर्जा के लिए सचेत रूप से जगह बनाएं।

कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes
Vediccodes - Your vibrations... our solutions

सुवर्ण दुर्गा पूजा समिति (पंजी.) द्वारा भव्य दुर्गा पूजा महोत्सव का 25वाँ वर्ष

नई दिल्ली। राजधानी के हृदय स्थल–3ए ब्लॉक,WEA सत नगर,गंगा मंदिर मार्ग करोल बाग में सुवर्ण दुर्गा पूजा समिति (पंजीकृत) द्वारा इस बार 25वे वर्षों में माँ दुर्गा की भव्य पूजा महोत्सव का आयोजन किया गया।

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

इस वर्ष भी पूजा का भव्य आयोजन 15 अक्टूबर 2026 से 21 अक्टूबर 2026 तक किया गया। यह पूजा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, एकता और बंगाली परम्परा का प्रतीक है। इस वर्ष रजत जयंती समारोह (25वाँ वर्ष) के उपलक्ष्य में महोत्सव को और भी भव्य रूप दिया गया।

समिति के (चेयरमैन) श्री उत्तम सामंत जी, (अध्यक्ष) श्री सुमेर माजी जी एवं (सांस्कृतिक सचिव) श्री विकास उज्जैनवाल जी ने बताया कि रपिछले 25 वर्षों से हम माँ के आशीर्वाद से इस परम्परा को निभा रहे हैं। इस वर्ष माँ दुर्गा की विशाल प्रतिमा कोलकाता के कारीगरों द्वारा तैयार की गई हैं। मुंबई और कोलकाता के कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। भोग-प्रसाद, लाइटिंग, फूलों की सजावट (एवं) इस वर्ष भव्य जगन्नाथ पुरी पंडाल मुख्य आकर्षण का केंद्र रहा। इस अवसर पर मुख्यअतिथिः- के रूप में उत्तर पश्चिमी लोकसभा के लोकप्रिय सांसद श्री योगेंद्र चंदोलिया जी, अंतर्राष्ट्रीय विशेष संपर्क प्रमुख, विश्व हिंदू परिषद श्री कपिल खन्ना जी, विशिष्टअतिथिः- राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग भारत सरकार के सदस्य श्री मनोज कुमार बाल्मीकि जी, भाजपा दिल्ली प्रदेश के उपाध्यक्ष श्री राजेश भाटिया जी, भाजपा दिल्ली प्रदेश की उपाध्यक्ष श्रीमती सोना कुमारी जी, लोकप्रिय विधायक राजेंद्र नगर श्री उमंग बजाज जी, दिल्ली छावनी बोर्ड रक्षा मंत्रालय भारत सरकार के सदस्य श्री राजेश गोयल जी, भाजपा जिला करोल बाग के अध्यक्ष श्री वीरेंद्र बब्बर जी, वरिष्ठ अधिवक्ता एवं समाज सेविका गुवाहाटी सुश्री निशा पोद्दार जी, कोरोना योद्धा एवं प्रसिद्ध समाज सेवक श्री डॉ. चिरंजीव मल्होत्रा जी, लोकप्रिय विधायक करोल बाग श्री विशेष रवि जी अतिथिः- आजादपुर मंडी दिल्ली सरकार के पूर्व अध्यक्ष श्री विपिन लंबा जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिला करोल बाग के संघ चालक श्री अशोक सचदेवा जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिला करोल बाग के जिला कार्यवाह श्री रमेश नेगी जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिला करोल बाग के नगर संघ चालक श्री सत्यप्रकाश जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिला करोल बाग के नगर कार्यवाह श्री प्रदीप जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिला करोल बाग के श्री अनिल जी, भाजपा जिला करोल बाग के कोषाध्यक्ष श्री रोहित साहनी जी, भाजपा SC मोर्चा जिला करोल बाग के महामंत्री श्री आनंद लाल जी की गौरवपूर्ण उपस्थिति रही। प्रतिदिन हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने मां दुर्गा के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लिया। और विजयदशमी के उपरांत भव्य विसर्जन शोभायात्रा करोल बाग क्षेत्र के विभिन्न मार्गो से होती हुई निकल गई। जिसमें बुजुर्ग, युवाओं, महिलाओं, पुरुषों, सामाजिक लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया यात्रा में चार चांद लगाए।







जयकारों और पुष्पवर्षा के साथ आर्यिका विष्णुप्रभा माताजी ससंघ का भांकरोटा जैन मंदिर में मंगल प्रवेश, 48 दीपों से भक्तामर स्तोत्र की दीप अर्चना, श्रद्धालुओं ने भक्ति भाव से की आराधना

--- रविवार को आर्यिका संघ के सानिध्य में होगा कलशाभिषेक, शांतिधारा एवं विधान पूजन, सामूहिक गोठ के साथ वार्षिक मेले का होगा समापन

परिवहन विशेष न्यूज

जयपुर। अजमेर रोड स्थित भांकरोटा के अति प्राचीन एवं अतिशय क्षेत्र दिगंबर जैन मंदिर में दो दिवसीय वार्षिक मेले का शुभारंभ शनिवार को आर्यिका विष्णुप्रभा माताजी ससंघ के मंगल प्रवेश के साथ हुआ। इस अवसर पर बैंड-बाजों, जयकारों और पुष्पवर्षा के बीच श्रद्धालुओं ने आर्यिका संघ का भव्य स्वागत किया। इससे पूर्व आर्यिका संघ ने प्रातः 6:15 बजे कमला नेहरू नगर स्थित दिगंबर जैन मंदिर से विहार प्रारंभ किया। अजमेर रोड एवं भांकरोटा बस स्टैंड होते हुए संघ ने अतिशय क्षेत्र जैन मंदिर में मंगल प्रवेश किया। मंदिर प्रबंध समिति के पदाधिकारियों एवं महिला मंडल की सदस्याओं ने आर्यिका संघ के पाद प्रक्षालन एवं आरती कर अगवानी की। इसके पश्चात मंदिर में विराजमान मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की अति प्राचीन प्रतिमा का कलशाभिषेक किया गया तथा आर्यिका विष्णुप्रभा माताजी के मुखारविंद से भव्य शांतिधारा संपन्न हुई।

अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा एकता संघ अध्यक्ष अभिषेक जैन बिट्टू ने बताया कि मेले के प्रथम दिन प्रातः 9 बजे आर्यिका विष्णुप्रभा माताजी ससंघ के मंगल प्रवचन हुए। इसके बाद प्रातः 10 बजे आर्यिका संघ की आहारचर्या प्रारंभ हुई। संध्याकालीन सत्र में शाम 6:15 बजे श्रीजी की महामंगल आरती की गई। इसके पश्चात ब्रह्मचारिणी शैली दीदी के प्रवचन हुए। शाम 7 बजे भांकरोटा जैन समाज की ओर से 48 दीपों के अर्घ समर्पित करते हुए भक्तामर स्तोत्र मंडल पर भव्य दीप अर्चना की गई। श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव के साथ भगवान की आराधना कर धर्मलाभ प्राप्त किया।

मेला मुख्य संयोजक नगेन्द्र सेठी ने बताया कि रविवार को वार्षिक मेले के दूसरे दिन आर्यिका विष्णुप्रभा माताजी ससंघ के सानिध्य में विभिन्न धार्मिक आयोजन होंगे। प्रातः 7 बजे श्रीजी का कलशाभिषेक एवं शांतिधारा होगी। प्रातः 8 बजे आर्यिका श्री विष्णुप्रभा माताजी के मंगल प्रवचन होंगे तथा प्रातः 9:30 बजे आर्यिका संघ की आहारचर्या संपन्न होगी।



इसके पश्चात प्रातः 11:15 बजे आर्यिका संघ के सानिध्य में विधान पूजन प्रारंभ होगा। इस दौरान आयोजन के सहयोगियों एवं आमंत्रित अतिथियों का सम्मान-अभिनंदन किया जाएगा। धार्मिक अनुष्ठानों के पश्चात जैन समाज की सामूहिक गोठ आयोजित होगी। संध्याकालीन सत्र में श्रीजी की महामंगल आरती के साथ दो दिवसीय वार्षिक मेले का समापन होगा।

णमोकार महामंत्र की गूंज से भक्तिमय हुआ जैन मंदिर, नवग्रह युवक मंडल ने जगाई धर्म-साधना की अलख

35 मिनट तक सामूहिक महामंत्र पाठ में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब, गर्म दूध वितरण कर भक्तों को दी प्रभावना

आगरा। श्री 1008 प्रभु पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, सेक्टर-4बी, आगरा में नवग्रह युवक मंडल के तत्वावधान में 35 मिनट तक णमोकार महामंत्र का सामूहिक पाठ अत्यंत भक्तिभाव और श्रद्धा के साथ संपन्न हुआ। महामंत्र की आध्यात्मिक गूंज से मंदिर परिसर भक्तिमय हो उठा।

धर्म, सेवा और संगठन का संदेशः नवग्रह युवक मंडल की इस पहल ने धार्मिक आयोजनों के माध्यम से समाज को एक सूत्र में जोड़ने और युवा शक्ति की धर्म एवं सामाजिक सेवा के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया। कार्यक्रम में समाज के श्रद्धालुओं, मंदिर कमेटी, महिला मंडल और बच्चों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता कर धर्मलाभ प्राप्त किया।

सामूहिक मंत्रोच्चार ने धार्मिक आस्था, आध्यात्मिक चेतना और सामाजिक एकजुटता का संदेश दिया। समाज के श्रेष्ठीजनों का भी कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग रहा। पाठ के उपरांत नवग्रह युवक मंडल की ओर से गर्म दूध वितरित कर प्रभावना की गई।

कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष संदेश जैन, मंत्री अभिषेक जैन, संयोजक प्रवीन जैन, कोषाध्यक्ष मयंक जैन, उपाध्यक्ष सौरभ जैन, उपमंत्री रोहित जैन और संगठन मंत्री संतोष जैन सहित मंडल के सभी सदस्यों की सक्रिय उपस्थिति रही। मीडिया प्रभारी लकी जैन ने कार्यक्रम की व्यवस्थाओं और संचालन में अग्रणी भूमिका निभाई।



गुड गवर्नेंस अवार्ड के लिए एक नवंबर से शुरू होगी आवेदन प्रक्रिया : डीसी

सुशासन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को मिलेगा सम्मान, 51 हजार रुपये तक की नकद राशि

सरकारी कर्मचारी 1 से 25 नवंबर तक कर सकेंगे आवेदन, राज्य स्तर और जिला स्तर पर दिए जाएंगे सुशासन सम्मान, 4 कर्मचारियों की टीम भी कर सकेगी आवेदन

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 24 अक्टूबर हरियाणा सरकार ने सरकारी कार्यप्रणाली में पारदर्शिता, नवाचार और बेहतर प्रशासन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हरियाणा सुशासन पुरस्कार योजना 2026 (हरियाणा सुशासन पुरस्कार योजना 2026) अधिसूचित की है। इस योजना के तहत असाधारण एवं नवाचार पूर्ण कार्य करने वाले सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्मानित किया जाएगा। पुरस्कार राज्य स्तर और जिला स्तर पर प्रदान किए जाएंगे।

डीसी वर्षा खांगवाल ने जानकारी देते हुए बताया कि हरियाणा सुशासन पुरस्कार योजना 2026 के अनुसार, राज्य स्तर पर उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को 51,000 रुपये प्रति सदस्य तथा जिला स्तर पर चयनित कर्मचारियों को 31,000 रुपये प्रति सदस्य नकद पुरस्कार दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त विजेताओं को ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किए जाएंगे।

डीसी ने बताया कि हरियाणा सुशासन पुरस्कार योजना 2026 के तहत राज्य स्तर पर दो श्रेणियों में पुरस्कार दिए जाएंगे। इनमें राज्य फ्लैगशिप पुरस्कार और राज्य पुरस्कार शामिल हैं। दोनों श्रेणियों में अधिकतम पांच-पांच पुरस्कार प्रदान किए जा सकेंगे। राज्य स्तर के पुरस्कार विजेताओं को 51,000 रुपये प्रति सदस्य की दर से नकद राशि मिलेगी। साथ ही, हरियाणा सरकार के मुख्य सचिव द्वारा हस्ताक्षरित प्रशस्ति पत्र और ट्रॉफी प्रदान की जाएगी। प्रशस्ति पत्र की प्रति संबंधित प्रशासनिक सचिव के माध्यम से कर्मचारी की सर्विस बुक में भी रखी जा सकेगी।

जिला स्तर पर भी होंगे सम्मानित

जिला स्तर पर प्रत्येक जिला में अधिकतम पांच पुरस्कार दिए जा सकेंगे। इन पुरस्कारों के तहत चयनित कर्मचारियों को 31,000 रुपये प्रति सदस्य नकद राशि, ट्रॉफी और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा। जिला स्तर के पुरस्कारों के लिए प्रशस्ति पत्र संबंधित मंडलायुक्त द्वारा जारी किया जाएगा। इसके लिए उपायुक्त की सिफारिश आवश्यक होगी। पुरस्कारों की स्वीकृति संबंधित जिला के उपायुक्त द्वारा दी जाएगी।

चार कर्मचारियों की टीम भी कर सकेगी आवेदन

डीसी ने बताया कि हरियाणा सुशासन पुरस्कार योजना 2026 के तहत कोई कर्मचारी व्यक्तिगत रूप से या अधिकतम चार सदस्यों की टीम के रूप में आवेदन कर सकता है। टीम के प्रत्येक सदस्य को सम्मान राशि प्रदान की जाएगी, चाहे उसका पद या रैंक कुछ भी हो। इस योजना का लाभ हरियाणा सरकार के विभागों, बोर्डों, निगमों, वैधानिक प्राधिकरणों, मिशन, समितियों, संस्थानों, विश्वविद्यालयों और सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण वाले सार्वजनिक उपक्रमों के पात्र कर्मचारियों को मिलेगा। इसमें ग्रुप-ए, बी, सी और डी के कर्मचारी शामिल हैं। इसके अलावा अधिसूचना में निर्धारित विभिन्न माध्यमों से नियुक्त संविदात्मक कर्मचारियों को भी पात्रता दी गई है।

*** 1 जनवरी 2025 से 30 अक्टूबर 2026 तक के कार्यों पर होगा विचार***

हरियाणा सुशासन पुरस्कार योजना 2026 के तहत पुरस्कारों के लिए कर्मचारियों के प्रदर्शन की मूल्यांकन अवधि 1 जनवरी 2025 से 30 अक्टूबर 2026 तक निर्धारित की गई है। इस अवधि के दौरान किए गए उत्कृष्ट कार्यों, नवाचारों



और योजनाओं के प्रभाव के आधार पर आवेदनों पर विचार किया जाएगा। आवेदन प्रक्रिया 1 नवंबर 2026 से शुरू होगी। आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि 25 नवंबर 2026 निर्धारित की गई है। राज्य स्तर और जिला स्तर के पुरस्कारों के लिए विजेताओं का चयन अधिमानतः 15 दिसंबर 2026 तक पूरा किया जाएगा।

*** ऑनलाइन आवेदन अनिवार्य***

पुरस्कार के लिए आवेदन निर्धारित ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से करना अनिवार्य होगा। आवेदन का लिंक haryanagoodgovernanceawards.haryana.gov.in है। आवेदन संबंधित कार्यालयाध्यक्ष या विभागाध्यक्ष के माध्यम से आगे बढ़ाया जाएगा। विभागाध्यक्ष अपनी विस्तृत टिप्पणी के साथ आवेदन संबंधित प्रशासनिक सचिव को भेजेंगे। इसके बाद प्रशासनिक सचिव अपनी टिप्पणी और सिफारिश सहित आवेदन को सामान्य प्रशासन विभाग (अनुसंधान इकाई) के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। राज्य स्तर पर पुरस्कारों के लिए आवेदन सीधे सशक्त समिति के समक्ष प्रस्तुत नहीं किए जा सकेंगे। संबंधित प्रशासनिक सचिव विभागाध्यक्षों से परामर्श करके पात्र कर्मचारियों या टीमों के नामों की सिफारिश भी कर सकेंगे।

*** आवेदन के साथ देने होंगे ये दस्तावेज***

आवेदकों को अपने आवेदन के साथ अधिकतम 200 शब्दों का परियोजना विवरण देना होगा। इसमें संबंधित कार्यक्रम या पहल, क्रियान्वयन की रणनीति, कार्यान्वयन अवधि, उल्लेखनीय उपलब्धियां, परिणाम, सकारात्मक प्रभाव, विस्तार की संभावनाएं और स्थायित्व का उल्लेख करना होगा। इसके अतिरिक्त अधिकतम 10 स्लाइड की पावरपॉइंट प्रस्तुति, कर्मचारी का नाम, पदनाम, तैनाती का स्थान तथा एचआरएमएस के अनुसार पेयी कोड देना अनिवार्य होगा।

समितियां करेंगी आवेदनों की जांच

राज्य स्तर के पुरस्कारों के लिए सरकार द्वारा गठित सशक्त समिति आवेदनों की समीक्षा कर पुरस्कारों के लिए नामों की सिफारिश करेगी। अंतिम स्वीकृति हरियाणा सरकार द्वारा दी जाएगी। जिला स्तर पर उपायुक्त की अध्यक्षता वाली जिला स्तरीय सशक्त समिति आवेदनों पर विचार करेगी। इस समिति में पुलिस अधीक्षक अथवा पुलिस उपायुक्त (मुख्यालय), अतिरिक्त उपायुक्त और अध्यक्ष द्वारा सहयोजित अन्य अधिकारी शामिल हो सकेंगे।

डीसी ने बताया कि हरियाणा सुशासन पुरस्कार योजना 2026 का उद्देश्य सरकारी कर्मचारियों को बेहतर प्रशासन, नवाचार, पारदर्शिता और जनहित में प्रभावी कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना है। सरकार को उम्मीद है कि इस पहल से प्रदेश में सुशासन की संस्कृति मजबूत होगी और उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को प्रोत्साहन मिलेगा।

किसानों को मंडियों में जरूरी सुविधाएं प्रदान करना सरकार की प्राथमिकता : श्याम सिंह राणा





हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्याम सिंह राणा ने बेरी अनाज मंडी में बाजरा व धान खरीद का लिया जायजा, अधिकारियों को दिए निर्देश

बेरी (झज्जर), 24 अक्टूबर।

हरियाणा के कृषि एवं किसान कल्याण, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री श्री श्याम सिंह राणा ने शनिवार की सुबह बेरी अनाज मंडी का दौरा कर बाजरा व धान की खरीद व्यवस्था का जायजा लिया। उन्होंने खरीद प्रक्रिया का निरीक्षण करते हुए किसानों और आढ़तियों से बातचीत की। उपमंडल प्रशासन की तरफ से एसडीएम रेणुका नांदल ने कृषि मंत्री का स्वागत करते हुए खरीद प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी दी।

कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा ने बताया कि किसानों को अपनी फसल बेचने में किसी प्रकार की परेशानी नहीं आ रही है। खरीद प्रक्रिया पारदर्शी, सुचारू और समयबद्ध ढंग से पूरी की जाए तथा किसानों की समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर समाधान सुनिश्चित किया जाए।

केंद्र और प्रदेश सरकार किसानों के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध

कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा ने अनाज मंडी परिसर स्थित मार्केट कमेटी कार्यालय में संबंधित विभागों और खरीद एजेंसियों के अधिकारियों के साथ बैठक कर व्यवस्थाओं की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि केंद्र और प्रदेश सरकार किसानों के हितों की रक्षा करने तथा उनकी उपज का उचित मूल्य सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। मंडियों में किसानों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाना और उनकी फसल की निर्धारित नियमों के अनुसार खरीद सुनिश्चित करना सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है।

खरीद से लेकर भुगतान तक व्यवस्थाएं दुरुस्त रखें अधिकारी

कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा ने कहा कि मंडियों में फसल खरीद के साथ-साथ उठान, भंडारण और भुगतान की व्यवस्था भी सुचारू बनी रहनी चाहिए। उन्होंने कहा सभी खरीद एजेंसियां निर्धारित नियमों की पालना सुनिश्चित करते हुए आपसी तालमेल के साथ कार्य करें। उन्होंने कहा कि खरीद व्यवस्था की नियमित निगरानी की जाए और मंडियों में फसल का अनावश्यक जमाव न होने दिया जाए। फसल का समय पर उठान सुनिश्चित किया जाए, ताकि मंडी में आने वाले अन्य किसानों को भी अपनी उपज उतारने और बेचने में सुविधा मिल सके।

बुनियादी सुविधाओं और माजरा खरीद केंद्र पर दिया जोर

कृषि मंत्री ने बेरी अनाज मंडी में बिजली, पेयजल, छाया, शौचालय और साफ-सफाई जैसी मूलभूत सुविधाओं को दुरुस्त रखने के निर्देश दिए। उन्होंने अटल कैंटीन की व्यवस्था का भी विशेष ध्यान रखने को कहा, ताकि मंडी में आने वाले किसानों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। इसके अलावा माजरा खरीद केंद्र पर भी किसानों के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि किसानों को मंडियों में बेहतर वातावरण और सुविधाएं उपलब्ध करवाना संबंधित अधिकारियों की जिम्मेदारी है। इसके लिए सभी विभाग नियमित निगरानी रखें और व्यवस्था में सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

यह रहे मौजूद

इस अवसर पर मार्केट कमेटी बेरी के चेयरमैन राजेंद्र शर्मा, नगर पालिका बेरी के चेयरमैन देवेंद्र कादयान, डीएफएससी आदित्य कौशिक, नायब तहसीलदार मनोज कुमार, मार्केट कमेटी सचिव डॉ. अमनदीप सिंह, वेयरहाउसिंग के डीएम रोहतास दहिया, हैफेड के डीएम कृष्ण श्योराण, एएफएसओ अमरजीत सिंह, एसडीओ विकास गुप्ता, आढ़ती एसोसिएशन के प्रधान दलबीर सिंह, एआर बिजेंद्र सुहाग, सरिता छोकर, सतीश गोच्छी, जयदीप कादयान और सतीश लाला बेरी सहित संबंधित विभागों के अधिकारी, आढ़ती और अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

अग्रोहा धाम 25 अक्टूबर को विशाल वार्षिक मेले की सभी तैयारियां पूरी हो चुकी है- बजरंग गर्ग



अग्रोहा धाम को दुल्हन की तरह लाइट, फुल, लड़ियों से सजाया गया है- बजरंग गर्ग

हरियाणा हिसार// राजेश सलूजा

अग्रोहा धाम वैश्य समाज के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष व हरियाणा प्रदेश व्यापार मंडल के प्रांतीय अध्यक्ष बजरंग गर्ग ने अग्रोहा धाम में वार्षिक मेले की तैयारी का जायजा लेने के उपरांत कहा कि अग्रोहा धाम 25 अक्टूबर को विशाल वार्षिक मेले की सभी तैयारियां पूरी हो चुकी है। अग्रोहा धाम को दुल्हन की तरह लाइट, फुल, लड़ियों से सजाया गया है। मेले में अलग-अलग तीन स्टेज बनाई गई है। अग्रोहा धाम मेले में देश व प्रदेश भर से भारी संख्या में लोग भाग लेंगे। बजरंग गर्ग ने कहा कि ट्रेड फेयर मेला व अनेकों प्रकार की के झूले व झांकियां लगाई गई है। अग्रोहा धाम में मुख्य कार्यक्रम भव्य संस्कृतिक कार्यक्रम व सम्मेलन दोपहर 12:00 से आरंभ होगा। 25 अक्टूबर को प्रातः 5:00 बजे शक्ति सरोवर स्नान, 7:00 बजे सभी मंदिरों में आरती, 8:00 बजे भव्य महिला कलश यात्रा, 9:00 बजे छप्पन भोग व सवामणि का प्रसाद, 10:15 बजे ध्वजारोहण और 12:00 बजे भव्य संस्कृतिक कार्यक्रम व सम्मेलन होगा। बजरंग गर्ग ने कहा कि मेले में चार भंडारे, पीने का पानी स्टालें, मंदिरों के दर्शन, झांकियां, अप्पू घर, जूता घर, पार्किंग, सम्मेलन पंडाल, मेडिकल कैंप, ट्रेड फेयर, स्वागत कमेटी आदि की अलग-अलग ड्यूटियां लगाई गई है। मेले में हिमाचल के राज्यपाल कविंद्र गुप्ता, निकाय मंत्री विपुल गोयल, पंजाब मंत्री वीरेंद्र गोयल, पूर्व राज्यसभा सांसद डॉक्टर सुभाष चंद्र, हिसार विधायक सावित्री जिंदल, ब्रह्ममहार्षि जगतगुरु कुमार स्वामी, मशहूर कलाकार मासूम शर्मा, प्रसिद्ध भजन गायिका अंजनी द्विवेदी आदि प्रमुख लोग भाग लेंगे। मेले में हर प्रकार की व्यवस्था सुचारू रूप से धाम कमेटी द्वारा की गई है। जिसमें 700 सेवादार के अलावा पुलिस प्रशासन की ड्यूटी लगाई गई है। मेले में प्राइवेट 100 व्यक्तियों की सिक्योरिटी अलग से लगाई गई है।

बरवाला को मिली आधुनिक बस स्टैंड की सौगात, कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने किया उद्घाटन

गंगवा बोले मॉडर्न अनाज मंडी, सिटी पार्क, रामबाग और स्टेडियम सहित कई परियोजनाओं पर चल रहा काम, शहर को सुंदर और सुविधाजनक बनाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा)

बरवाला शहर में विकास कार्यों को निरंतर गति दी जा रही है। शहर में आधुनिक बस स्टैंड बनकर तैयार हो चुका है। बस स्टैंड के साथ लगती मॉडर्न अनाज मंडी का निर्माण कार्य भी जारी है। सरकार का प्रयास है कि बरवाला शहर में नागरिकों को बेहतर सुविधाएं मिलें और शहर को आधुनिक एवं सुंदर बनाया जाए।

यह बात हरियाणा के लोक निर्माण एवं जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा ने शनिवार को बरवाला बस स्टैंड के उद्घाटन के दौरान उपस्थित जन को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने बताया कि बस स्टैंड के अंदर नागरिकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए आधुनिक व्यवस्थाएं विकसित की गई हैं। इनमें छह नए बस-बे के साथ दुकान, टिकट वेंडिंग मशीन, एसी वेटिंग रूम और शिशु को दूध पिलाने के लिए अलग कक्ष बनाया गया है। यात्रियों के लिए महिला, पुरुष और दिव्यांगजनों के अनुकूल शौचालयों की व्यवस्था भी की गई है। प्रथम तल पर पांच कार्यालय कक्ष, चालकों के लिए दो डॉर्मिटरी, एक अतिरिक्त कक्ष और शौचालयों की व्यवस्था की गई है।

उन्होंने कहा कि आधुनिक बस स्टैंड बनने से यात्रियों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी और बरवाला में परिवहन व्यवस्था को मजबूती मिलेगी। बस स्टैंड का निर्माण शहर के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि बरवाला शहर में विकास को लेकर किए गए वादों को पूरा करने के लिए सरकार लगातार प्रयासरत है। रामबाग के विकास के लिए करीब 3.30 करोड़ रुपये का टेंडर किया गया है। सिटी पार्क पर भी लगभग 3.30 करोड़ रुपये की लागत आएगी। इसके अलावा शहर में सडक़ों, गलियों, लाइब्रेरी और अन्य जनसुविधाओं से जुड़े कार्य किए जा रहे हैं। शहर के स्टेडियम का निर्माण कार्य भी प्रगति पर है, जबकि कम्युनिटी सेंटर का काम लगभग पूरा होने वाला है। उन्होंने बताया कि बरवाला शहर की चारों दिशाओं में प्रवेश द्वारों का निर्माण किया जा रहा है। हिसार की तरफ से शहर में प्रवेश और निकास के दोनों ओर सुंदर चौक विकसित किए जाएंगे। इससे शहर की सुंदरता बढ़ेगी और लोगों को बेहतर शहरी सुविधाएं मिलेंगी। शहर की अधिकांश गलियों का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। शेष गलियों का काम भी जल्द शुरू करवाया जाएगा।



कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने बताया कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश में विकास कार्य तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने चुनाव के दौरान जनता से जो वादे किए थे, उन्हें पूरा करने की दिशा में लगातार काम किया जा रहा है। सरकार बनने के बाद किए गए 210 वादों में से 75 वादे पूरे किए जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि लाडो लक्ष्मी योजना के तहत महिलाओं को 2100 रुपये देने और बीसी वर्ग को अलग से आरक्षण देने जैसे महत्वपूर्ण फैसले सरकार की जनकल्याणकारी सोच को दर्शाते हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय के सिद्धांत के अनुरूप सरकार का प्रयास है कि अंतिम व्यक्ति तक सरकारी योजनाओं और सेवाओं का लाभ पहुंचे। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के विजन और मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में हरियाणा निरंतर प्रगति कर रहा है। बरवाला शहर में विकास परियोजनाओं को आगे बढ़ाकर नागरिकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। शहर को सुंदर, स्वच्छ और आधुनिक बनाने के लिए विकास कार्यों का यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा।

इस अवसर पर पूर्व चेयरमैन सतबीर वर्मा, एसडीएम अश्वीर नैन, रोडवेज महाप्रबंधक राहुल मित्तल, मंडल अध्यक्ष मोनू संदूजा, नगर परिषद चेयरमैन रमेश बैटरीवाला, मंडी चेयरमैन प्रवीण सैनी, वाइस चेयरमैन रोशन घणघस, जिला पार्षद ओपी मालिया, बरवाला विधानसभा मीडिया प्रभारी भाजपा कमल हंदूजा, टीएम प्रीतम सिवाच, एसपीओ राजबीर गौतम, भाजपा वरिष्ठ नेता देव शर्मा, महेश शर्मा, राजबीर लांबा, सुनील मेहता, समाजसेवी रामकेश बंसल, पूनम जांगड़ा, मंडल मीडिया प्रभारी भाजपा बरवाला राजेश सलूजा, शुभम मदान, तरसेम पूनिया, सुजीत प्रजापति, सुरेश गोयल, निदेशक एचआरडीसी तरूण मेहता, एडवोकेट जगविंद्र सिंगला, आशा, पार्षद धर्म सिंह, कालू राम, ज्योति बंसल, एमसी रामचंद्र मौर्य, संजय भादड़, प्रेम जांगड़ा, दिनेश सैनी, विनोद भुक्कल, रामफल रंगा, पुरुषोत्तम गुप्ता, रणसिंह, प्रमोद सिवाज, राकेश बंसल, सत्यवान बालक, सरपंच विजय, सरपंच सोनू, वेद प्रकाश, प्रमुख समाजसेवी महेन्द्र सेतिया, पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारियों सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

समग्र शिक्षा दिल्ली शिक्षा विभाग के अंतर्गत तीन दिवसीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम का आयोजन





परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: समग्र शिक्षा, दिल्ली शिक्षा विभाग के अंतर्गत बाल भवन पब्लिक स्कूल, मयूर विहार फेज-2 और RSKV पॉकेट-B, मयूर विहार फेज-2 के बीच कक्षा 6वीं, 7वीं और 8वीं के विद्यार्थियों के लिए तीन दिवसीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, नृत्य, खेलकूद और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लिया। बच्चों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई और प्रत्येक प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर प्रिंसिपल डॉ. मनीषा रानी ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान के महत्व पर प्रकाश डाला। डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर डॉ. अंजू पाल ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों को अनुभव के माध्यम से सीखने का अवसर देते हैं। वहीं, क्लस्टर कोऑर्डिनेटर डॉ. सपना भार्गव ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए संस्कृति के महत्व पर अपने विचार रखे।

इस आयोजन के माध्यम से विद्यार्थियों को दूसरे विद्यालय के बच्चों के साथ संवाद करने, अपनी प्रतिभा दिखाने और नई गतिविधियों से सीखने का अवसर मिला। इस तरह के कार्यक्रम बच्चों में आपसी सहयोग, आत्मविश्वास और विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सम्मान की भावना विकसित करने में सहायक होते हैं।

शरद पूर्णिमा 25 अक्टूबर : शरद पूर्णिमा का वैज्ञानिक-अध्यात्मिक महत्व

डा. विनोद बब्बर



शरद हमारी जिजीविषा का प्रतीक है। तभी तो मौसम का राजा बसंत है लेकिन लम्बे जीवन की कामना करते हमारे पूर्वजों ने सौ बसंत नहीं, सौ शरद मांगे। पूरा वैदिक वाङ्मय सौ शरद का उद्घोष करते हुए कहता है- जीवेम्शरदः शतम। कर्म करते हुए सौ शरद जीवित रहें। जीवन में राग, रस-रंग का प्रतीक तो बसंत है। पर उसके संघर्ष का प्रतीक तो शरद ही है। पूरे साल में सिर्फ एक रोज ही शरद पूर्णिमा का चांद सोलह कलाओं वाला होता है। कहते हैं चन्द्रमा से उस रोज अमृत बरसता है। इसलिए शरद अमरत्व का प्रतीक भी है। आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाये तो चन्द्र का मतलब है शीतलता। बाहर कितने भी परेशान करने वाले प्रसंग आयें लेकिन हमारा मन-मस्तिष्क ऐसा मजबूत हो कि सांसारिक बाधाएं, व्याधियां, कठिनाइयां हमें विचलित न कर सकें।

यूं तो हर माह में पूर्णिमा आती है लेकिन शरद पूर्णिमा का महत्व सर्वाधिक है। वर्षा ऋतु की जरावस्था और शरद ऋतु के बाल रूप का यह सुंदर संयोग हर किसी का मन मोह लेता है। कारण स्पष्ट है- आकाश में न बादल, न ही धूल-गुबार। यानी एकदम साफ़। ऐसे में पूर्ण चन्द्रमा की छटा निराली होती है। इसीलिए इसे उल्लास और मस्ती से भरने वाली चमचमाती, खिलखिलाती रात कहा गया है।

हमारे धर्म ग्रंथों में भी इस पूर्णिमा को विशेष बताया गया है। माना जाता है कि समृद्धि वैभव की देवी लक्ष्मी का जन्म शरद पूर्णिमा के दिन हुआ था। आश्विन मास की इस पूर्णिमा को आदिकवि महर्षि वाल्मीकिजी की जयन्ती भी मनाई जाती है। यह सर्वे ज्ञात है कि महर्षि वाल्मीकि ने भगवान राम के जन्म से पूर्व ही रामायण की रचना की। माता जानकी उन्हीं के आश्रम में रही जहां उन्हें लव और कुश के रूप में दो पुत्रों का जन्म हुआ। ऋषि ने उन बालकों को अनेक विधाओं से परिपूर्ण बनाया।

आश्विन मास की पूर्णिमा को शरद पूर्णिमा, रास पूर्णिमा, कोजागरी भी कहते हैं। इस रात्रि चन्द्रमा पृथ्वी के बहुत नजदीक होता है और उसकी उज्ज्वल किरणें पेय एवं खाद्य पदार्थों में पड़ती हैं तो उसे खाने वाला व्यक्ति वर्ष भर निरोग रहता है। उसका शरीर पुष्ट होता है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के अध्याय15 के श्लोक 13 कहा भी गया है:-

पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः।।

अर्थात्रसस्वरूप अर्थात्अमृतमय चन्द्रमा होकर सम्पूर्ण औषधियों को अर्थात्वनस्पतियों को पुष्ट करता हूँ।

इस दिन को कोजागरी पूर्णिमा कहने के पीछे कथा है कि शरद पूर्णिमा की रात्रि माँ लक्ष्मी आसमान में भ्रमण हुए पूछती है कि 'कौ जाग्रति'। यानी वह उन लोगों की सूची बनाती हैं जो रात में जाग रहे होते है। संस्कृत में 'कौ जाग्रति' का मतलब होता है की 'कौन जाग रहा है'। जो भक्तजन शरद पूर्णिमा की रात्रि में जाग रहे होते हैं उन्हें देवी लक्ष्मी अपना आशीर्वाद प्रदान कर उनका कल्याण करती हैं तथा जो सो रहा होता है वहां महालक्ष्मी नहीं ठहरतीं। इसीलिए लोग जागकर चंद्रमा को अर्घ्य देते हैं।

शरद पूर्णिमा को रासलीला की रात भी कहते हैं। धर्म शास्त्रों के अनुसार शरद पूर्णिमा की रात को ही भगवान श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ रास रचाया था।

शरद पूर्णिमा का मनोवैज्ञानिक पक्ष देखा जाए तो यही वह समय होता है जब मौसम में परिवर्तन की शुरुआत होती है और शीत ऋतु का आगमन होता है। इस दिन चन्द्रमा हमारी पृथ्वी सबसे करीब होता है। धान आदि की फसल अपने यौवन पर होती है अतः इस दिन किसान देविया शक्तियों से अच्छी फसल की कामना करते हुए उनसे आशीर्वाद मंगाता है। भारत के पूर्वोत्तर भागों विशेष रूप से बंगाल और उड़ीसा में इस दिन कुमारी कन्याएं प्रातः काल स्नान करके सूर्य और चन्द्रमा की पूजा करती हैं। माना जाता है कि इससे उन्हें योग्य पति की प्राप्त होती है। संक्षेप में कहें तो सभी अपने- अपने ढंग से स्वस्थ तन, प्रसन्न मन के साथ-साथ समृद्धि और धन चाहते हैं।

यहां भी स्मरणीय है कि शरद पूर्णिमा के अगले दिन से कार्तिक का महीना आरंभ होता है जिसके चौथे दिन करवा चौथ, तत्पश्चात अहोई, तेरह को धनतेरस, अमावस्या को भारतवंशियों का सबसे प्रसिद्ध त्यौहार दिवाली, अगले दिन गोवर्धन पूजा, फिर भैया दूज सहित अनेक त्यौहार होते हैं। कार्तिक स्नान को विशेष महत्व है तो कार्तिक पूर्णिमा को गुरु नानकदेव जी का जन्मदिन, गंगास्नान, कार्तिक पूर्णिमा के नाम से पूरे भारत में मनाया जाता है।

ऐसा माना जाता है कि इस दिन चंद्रमा की किरणें विशेष अमृतमयी गुणों से युक्त रहती है। कहा जाता है कि लंकाधिपति रावण शरद पूर्णिमा की रात प्राप्त होने वाली अमृतमयी किरणों को अपनी नाभि पर ग्रहण कर प्राण ऊर्जा संचय करता था जिससे उसे पुनर्यौवन शक्ति प्राप्त होती थी।

यह उन अमृतमयी किरणों का प्रभाव है कि अनेक रोगों का नष्ट हो जाते हैं। यही कारण है कि शरद पूर्णिमा की रात को लोग अपने घरों की छतों पर खीर रखते हैं जिससे चंद्रमा की किरणें उस खीर के संपर्क में आती है। विज्ञान भी इस बात को स्वीकारता है कि दूध में लैक्टिक अम्ल और अमृत तत्व होता है। यह तत्व किरणों से अधिक मात्रा में शक्ति का शोषण करता है। चावल में स्टार्च होने के कारण यह प्रक्रिया आसान हो जाती है। इससे जीवनदायिनी ऊर्जा प्राप्त होने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। धवल चंद्र से अमृत ग्रहण करने वाली खीर में कुछ जड़ी बूटियां को मिलाकर लेने से सांस के रोगों से मुक्ति मिलती है। इसलिए इस दिन देश के विभिन्न भागों में बड़े-बड़े आयोजन होते हैं जहां जरूरतमंद रोगियों को खीर के साथ दवा निशुल्क प्रदान की जाती है।

शरद पूर्णिमा पर विशेष कविता चाँदनी रात में बिखरती भक्ति की दिव्यता

ये शरद की उजली रात है, और चाँदनी का नूर,
प्रकृति के कण-कण में छाया भक्ति का सुरूर।
नील गगन में चाँद दमके, तारे यहाँ करते श्रृंगार,
अमृत बरसाएँ चाँदनी, करती मन को पारावार।

आज चाँदनी में नहाई धरती, शीतल मंद बयार,
यूं भक्ति-भाव से 'गूँज' उठे मंदिर और घर-द्वार।
ये राधा-कृष्ण की रासलीला, प्रेम सुधा बरसाए,
मुरली की मधुरिम तान हृदय में रस घोल जाए।

वृंदावन की कुंज गलियों में प्रेम का हैं मधुमास,
कृष्ण के संग है राधा-रानी, भक्ति का उल्लास।
गोपियों के नृत्य में झलकता आत्मा का संगीत,
प्रेम जहाँ पूजा बन जाए, जीवन हो पावन-प्रीत।

देखों माँ लक्ष्मी के आगमन की मंगल बेला आई,
धन-धान्य एवं सुख-समृद्धि की शुभ आशा लाई।
व्रत, पूजन और दीप जलाकर करें प्रभु का ध्यान,
मन के भीतर ज्योति जले, मिट ही जाए अज्ञान।

हाँ,खीर की कटोरी चाँद तले श्रद्धा से सज जाए,
हरेक परिवार के आँगन में खुशियों की धुन गाए।
प्रेम, दया और सत्य का दीप हृदय में ऐसे जलाएँ,
दीन-दुखियों के जीवन में आशा के फूल खिलाएँ।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

दिल्ली विश्वविद्यालय की युवा संगम फेज - 7 टीम को तमिलनाडु के लिए हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

रिपोर्ट डा मनोज कैन प्रस्तुतकर्ता विशेष संवाददाता परिवहन विशेष

दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध युवा संगम फेज-7 टीम शनिवार को गाँधी भवन के प्रांगण में एकत्रित हुई।

यहाँ से एक 56 सदस्यीय टीम को केंद्रीय विश्वविद्यालय तमिलनाडु के लिए मुख्य अतिथि दक्षिणी परिसर की निदेशक प्रो. रजनी अब्बी व शिक्षा मंत्रालय के अधिकारियों ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर श्रीयंश मोहन, शिक्षा मंत्रालय, डॉ.नरेश ग्रोवर, निदेशक(एआईसीटी) श्री जय सिंह निदेशक विदेश मंत्रालय व नोडल ऑफिसर डीयू युवा संगम फेज-7 प्रो के.पी.सिंह आदि उपस्थित रहे ।

युवाओं ने जोश भरने वाले नारे लगाए- युवा संगम है शान हमारी, यही है पहचान हमारी, ना जात, ना पात, युवा संगम का यही है साथ, अलग-अलग भाषा, अलग वेश, युवा संगम एक संदेश, कश्मीर से कन्याकुमारी, युवा संगम सबसे भारी, एक युवा सौ विचार, युवा संगम का यही प्रचार, हाथ में हाथ, युवा का साथ युवा संगम के साथ, युवा संगम करेगा कमाल, बदलेगा भारत का हाल, अनेकता में एकता , यही है भारत की विशेषता , एक भारत श्रेष्ठ भारत, यही है हमारा नारा, यही है सपना प्यारा, आदि नारों से दिल्ली विश्वविद्यालय गुंजायमान हो गया। गाँधी भवन में छात्रों ने लगभग आधे घंटे तक नारे लगाए।

एक भारत श्रेष्ठ भारत भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है। डीयू युवा संगम फेज -7 के मुख्य संरक्षक कुलगुरु प्रोफेसर योगेश सिंह एवं रजिस्ट्रार डॉ. विकास गुप्ता ने भी इस सुरक्षित व सुखद यात्रा के लिए अपनी शुभकामनाएं दी है और कहा कि अनेकता में एकता, यही है भारत की विशेषता।

यह टीम 24 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक केंद्रीय विश्वविद्यालय तमिलनाडु के नेतृत्व में राज्य का भ्रमण करेगी। इस अवसर पर विभिन्न विभागों, कॉलेजों के प्रिंसिपल, डीन, डायरेक्टर व शिक्षक उपस्थित रहे।

युवा संगम टीम को रवाना करने से पूर्व शिक्षा मंत्रालय के अधिकारी व श्रीयंश मोहन, नरेश ग्रोवर ने अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत युवाओं को अपनी संस्कृति, साहित्य और समाज से जोड़ने का माध्यम है।

उन्होंने बताया कि एक भारत, श्रेष्ठ भारत भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य देश की विविध संस्कृतियों, भाषाओं, परंपराओं और जीवन शैलियों के बीच आपसी समझ एवं एकता को बढ़ावा देना है। यह कार्यक्रम विभिन्न राज्यों के लोगों को एक-दूसरे की संस्कृति, कला, साहित्य और परंपराओं से परिचित कराना है।

उन्होंने यह भी कहा कि हमारे विद्यार्थी हर



क्षेत्र में बेहतर परिणाम दे रहे हैं शिक्षा, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी बढ़चढकर भाग ले रहे हैं।

"एक भारत-श्रेष्ठ भारत" कार्यक्रम के नोडल ऑफिसर, गाँधी भवन के निदेशक प्रो के.पी.सिंह ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों से राष्ट्रीय एकता, भाईचारे, सद्भाव और देशभक्ति की भावना मजबूत होती है।

यह पहल विविधता में एकता के भारतीय आदर्श को साकार करते हुए राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा "एक भारत-श्रेष्ठ भारतश्र पहल के अंतर्गत युवा संगम कार्यक्रम का आयोजन पिछले कई वर्षों से किया जा रहा है।

इस आयोजन का उद्देश्य देश के युवाओं में राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समझ और पारस्परिक सहयोग की भावना विकसित करना है।

इस कार्यक्रम के माध्यम से विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के विद्यार्थियों को दूसरे राज्यों की संस्कृति, भाषा, खान-पान, वेशभूषा, ऐतिहासिक स्थलों और विकास व नवाचार गतिविधियों को समझने का अवसर मिलता है। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम के तहत दिल्ली विश्वविद्यालय से 56 सदस्यों का एक दल (50 छात्र और 6 शिक्षक) 24 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक केंद्रीय विश्वविद्यालय तमिलनाडु के विभिन्न शैक्षणिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व के स्थलों का भ्रमण करेगी। गाँधी भवन के संयुक्त निदेशक प्रो हंसराज सुमन ने बताया है कि युवाओं के लिए एक सप्ताह शैक्षिक और सांस्कृतिक यात्रा के माध्यम से भारत की विविधता और एकता को बेहतर ढ़ंग से समझने, सराहने का अवसर मिलेगा ।

27 अक्टूबर को खुलेगा प्रत्याशियों की किस्मत का पिटारा



परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर ।गोरखपुर-फैजाबाद खंड शिक्षक निर्वाचन के लिए मतदान संपन्न होने के बाद 17 जिलों के 200 मतदेय स्थलों की मतपेटियों को दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के वाणिज्य संकाय में बने स्ट्रांग रूम में सुरक्षित रखकर सीलबंद कर दिया गया है। स्ट्रांग रूम के बाहर सुरक्षा बल मुस्तैद हैं और लगातार निगरानी कर रहे हैं।

23 अक्टूबर को हुए मतदान में कुल 54,910 मतदाताओं में से 43,433 शिक्षकों ने वोट डाला, जो 79.1 प्रतिशत रहा। मतदान के बाद सभी मतपेटियों को सुरक्षा व्यवस्था के बीच विश्वविद्यालय लाया गया। अब 27 अक्टूबर को कड़ी सुरक्षा में स्ट्रांग रूम खोला जाएगा और मतगणना होगी। मतगणना के बाद ही तय होगा कि शिक्षक मतदाताओं ने किस प्रत्याशी पर भरोसा जताया है।

रेल यात्रियों को होगी परेशानी

डॉ दीपक कुमार घोष



जमशेदपुर/खूंटी* आने वाले दिनों में झारखंड के रेल यात्रियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। कई ट्रेनों को रद्द कर दिया गया है। जिससे आवागमन में कठिनाई हो सकती है।दक्षिण पूर्व रेलवे के चक्रधरपुर रेल मंडल में विकास कार्यों के कारण आगामी दिनों में कई ट्रेनों का परिचालन प्रभावित होगा। दक्षिण पूर्व रेलवे, चक्रधरपुर मंडल के झारसुगुड़ा पैसेंजर यार्ड में नॉन-इंटरलॉकिंग का कार्य किया जाएगा। यह कार्य दिनांक 27 नवंबर से 17 दिसंबर 2026 तक निर्धारित तिथियों में होगा।इस कार्य के कारण दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से संबंधित कुछ यात्री गाड़ियों का परिचालन प्रभावित रहेगा, जिसका असर टाटानगर के यात्रियों पर पड़ेगा। रेलवे द्वारा इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी गई है।

उपायुक्त ने बिरसा मुंडा जिला पुस्तकालय का किया निरीक्षण

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक



खूंटी : उपायुक्त मो० जावेद हुसैन ने बिरसा मुंडा जिला पुस्तकालय का निरीक्षण कर पुस्तकालय के संचालन, साफ-सफाई, पेयजल, शौचालय, विद्युत व्यवस्था, विद्यार्थियों के बैठने की सुविधा एवं अध्ययन के अनुकूल वातावरण की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने पुस्तकालय में कार्यरत स्टाफ एवं लाइब्रेरियन की जानकारी लेते हुए व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने पर जोर दिया।निरीक्षण के क्रम में उपायुक्त ने भवन प्रमंडल के कार्यपालक अभियंता को आवश्यकता के अनुरूप भवन के जीर्णोद्धार हेतु आवश्यक कार्रवाई करने तथा विद्युत विभाग को विद्युत संबंधी समस्याओं का निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। साथ ही, पुस्तकालय के संचालन हेतु प्राप्त फंड का योजनाबद्ध तरीके से सदुपयोग करने एवं पुस्तकालय परिसर में स्थित कैंटीन का बेहतर संचालन सुनिश्चित करने को कहा।

उपायुक्त ने पुस्तकालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं की जानकारी ली।

'नशा मुक्त युवा भारत' की थीम पर नेबरहुड यूथ पार्लियामेंट का आयोजन, 200 से अधिक युवाओं ने लिया भाग

नई दिल्ली, 24 अक्टूबर 2026।
परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने, उन्हें राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करने तथा लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं से परिचित कराने के उद्देश्य से सर्वोदय को-एड विद्यालय, हरि नगर आश्रम, नई दिल्ली में 'नेबरहुड यूथ पार्लियामेंट' का आयोजन MY Bharat South Delhi, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'नशा मुक्त युवा भारत' की थीम के अंतर्गत किया गया। कार्यक्रम में 200 से अधिक युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति राजेश टंडन जी, उत्तराखंड उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश, की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। विद्यालय की एनसीसी टीम ने अतिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं में नशामुक्ति के प्रति जागरूकता बढ़ाना, स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करना तथा उन्हें सामाजिक और लोकतांत्रिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करना रहा।

कार्यक्रम में श्रीमती नीलम बिष्ट, EVGC ने 'विकसित भारत के लिए नशा मुक्त युवा' विषय पर जागरूकता व्याख्यान दिया। उन्होंने नशे के दुष्प्रभावों, युवाओं के स्वास्थ्य एवं भविष्य पर इसके प्रभाव तथा नशामुक्त समाज के निर्माण में युवा शक्ति की भूमिका पर प्रकाश डाला।

इसके पश्चात श्री अभिनव पांडेय, Youth Icon, Ministry of Youth Affairs and Sports (MoYAS), Government of India एवं BRICS Youth Representative ने MY Bharat की भूमिका और युवाओं के लिए उपलब्ध सहभागिता के अवसरों की जानकारी दी। उन्होंने युवाओं को 'नशा मुक्त युवा भारत' मिशन से जुड़ने तथा अपने परिवार, विद्यालय और समुदाय में जागरूकता फैलाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भागीदारी केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक समस्याओं के समाधान और सकारात्मक बदलाव लाने में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति राजेश टंडन जी ने अपने संबोधन में नशे की समस्या के सामाजिक एवं व्यक्तिगत प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए युवाओं से नशे के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करने की अपील की। उन्होंने युवाओं को जिम्मेदार नागरिक बनने, सकारात्मक आदतें अपनाने और





नशामुक्त समाज के निर्माण में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम के अंतर्गत नशा मुक्त भारत विषय पर चार तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। इन सत्रों में नशे के दुष्प्रभावों, जागरूकता की आवश्यकता तथा नशामुक्त समाज के निर्माण में युवाओं की भूमिका पर चर्चा की गई।

इसके पश्चात आयोजित मॉडल नेबरहुड यूथ पार्लियामेंट में प्रतिभागियों ने महिला आरक्षण विधेयक तथा 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विषयों पर संसदीय शैली में चर्चा की। युवाओं ने इन प्रस्तावों के संभावित लाभों, चुनौतियों और विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए। चर्चा के उपरांत दोनों विधेयकों को मॉडल संसद की प्रक्रिया के अंतर्गत पारित किया गया। इस गतिविधि के माध्यम से प्रतिभागियों को संसदीय कार्यप्रणाली, तार्किक विचार-विमर्श, नेतृत्व क्षमता, सार्वजनिक भाषण और लोकतांत्रिक सहभागिता का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती त्रिवेणी ने किया। कार्यक्रम के समन्वय में विद्यालय की विद्यान्जलि प्रभारी श्रीमती मधु बाला तथा EVGC श्रीमती नीलम बिष्ट की महत्वपूर्ण भूमिका रही। समापन अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती कांता ने मुख्य अतिथि, वक्ताओं, आयोजकों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

यह आयोजन युवाओं को नशे से दूर रहने, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा समाज में जागरूकता फैलाने के लिए प्रेरित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल रहा। 'नशा मुक्त युवा भारत' की भावना के अनुरूप इस नेबरहुड यूथ पार्लियामेंट ने युवा नेतृत्व, नागरिक जिम्मेदारी और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने का संदेश दिया।

देश के तीन आईआईटी में मेडिकल साइंस और इंजीनियरिंग का संगम: डॉक्टर नहीं, मेडिकल इंजीनियर तैयार करने की पहल





● डॉ. विजय गर्ग

कल्पना कीजिए कि किसी मरीज की सीटी स्कैन रिपोर्ट में एक हिस्सा स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा है। डॉक्टर को यह समझने में कठिनाई हो सकती है कि इसका कारण मशीन की तकनीकी समस्या है या मरीज की बीमारी। दूसरी ओर, मशीन बनाने वाले इंजीनियर को उस चिकित्सकीय परिस्थिति की पूरी जानकारी नहीं हो सकती। ऐसी स्थिति में चिकित्सा और तकनीक, दोनों का ज्ञान रखने वाले विशेषज्ञ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वे डॉक्टरों और इंजीनियरों के बीच बेहतर संवाद स्थापित करने, मशीनों की उपयोगिता बढ़ाने और रोगों की पहचान को अधिक सटीक बनाने में मदद कर सकते हैं।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान तेजी से तकनीक पर निर्भर होता जा रहा है। आज अस्पतालों में सीटी स्कैन, एमआरआई, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, बायो-सेंसर और अत्याधुनिक डायग्नोस्टिक मशीनों का उपयोग बढ़ रहा है। ऐसे में चिकित्सा और इंजीनियरिंग के बीच बेहतर तालमेल की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है।

इसी दिशा में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास, आईआईटी खड़गपुर और आईआईटी कानपुर चिकित्सा विज्ञान तथा इंजीनियरिंग को एक साथ लाने की दिशा में काम कर रहे हैं। इन संस्थानों का उद्देश्य ऐसे विशेषज्ञ तैयार करना है जो मानव शरीर की कार्यप्रणाली और आधुनिक चिकित्सा उपकरणों की तकनीक—दोनों को समझ सकें।



चिकित्सा और इंजीनियरिंग के बीच तालमेल क्यों जरूरी?

कल्पना कीजिए कि किसी मरीज की सीटी स्कैन रिपोर्ट में एक हिस्सा स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा है। डॉक्टर को यह समझने में कठिनाई हो सकती है कि इसका कारण मशीन की तकनीकी समस्या है या मरीज की बीमारी। दूसरी ओर, मशीन बनाने वाले इंजीनियर को उस चिकित्सकीय परिस्थिति की पूरी जानकारी नहीं हो सकती।

ऐसी स्थिति में चिकित्सा और तकनीक, दोनों का ज्ञान रखने वाले विशेषज्ञ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वे डॉक्टरों और इंजीनियरों के बीच बेहतर संवाद स्थापित करने, मशीनों की उपयोगिता बढ़ाने और रोगों की पहचान को अधिक सटीक बनाने में मदद कर सकते हैं।

हालांकि, ऐसे विशेषज्ञ डॉक्टरों और पारंपरिक इंजीनियरों का स्थान लेने के लिए नहीं, बल्कि उनके साथ मिलकर काम करने के लिए तैयार किए जाते हैं।

आईआईटी मद्रास: मेडिकल साइंस और इंजीनियरिंग का नया संगम

आईआईटी मद्रास ने मेडिकल साइंस एंड टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में विशेष शैक्षणिक पहल की है। संस्थान का उद्देश्य चिकित्सा विज्ञान, इंजीनियरिंग और आधुनिक तकनीक के बीच सहयोग को मजबूत करना है।

यहां मेडिकल साइंस एंड इंजीनियरिंग से संबंधित पाठ्यक्रमों में मानव शरीर की कार्यप्रणाली, गणितीय मॉडलिंग, क्लिनिकल न्यूरोसाइंस और मेडिकल इमेजिंग जैसे विषय शामिल हैं। इन विषयों के माध्यम से विद्यार्थियों को यह समझने का अवसर मिलता है कि इंजीनियरिंग के सिद्धांतों का उपयोग मानव शरीर, रोगों की पहचान और चिकित्सा अनुसंधान में किस प्रकार किया जा सकता है।

आईआईटी मद्रास के निदेशक प्रोफेसर वी. कामकोटि का मानना है कि तकनीकी संस्थानों को चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। चिकित्सा उपकरणों और स्वास्थ्य तकनीक के क्षेत्र में देश की क्षमता बढ़ाना भारत की दीर्घकालिक जरूरत है।

आईआईटी खड़गपुर: चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान की दिशा में कदम

आईआईटी खड़गपुर ने चिकित्सा विज्ञान और तकनीक के समन्वय के क्षेत्र में लंबे समय से काम किया है। यहां 2001 में स्कूल ऑफ मेडिकल साइंस एंड टेक्नोलॉजी की शुरुआत हुई थी।

संस्थान का एमएमएसटी कार्यक्रम विशेष रूप से ऐसे चिकित्सकों के लिए तैयार किया गया था, जो इंजीनियरिंग और भौतिक विज्ञान के ज्ञान के माध्यम से अपने चिकित्सा कौशल को और बेहतर बनाना चाहते हैं।

आईआईटी खड़गपुर ने अपने परिसर में डॉ. बी. सी. रॉय इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी के माध्यम से चिकित्सा सुविधाओं और अनुसंधान को आगे बढ़ाने की दिशा में भी काम किया है।

यहां मेडिकल इमेजिंग, मॉलिक्यूलर इमेजिंग, बायोमटेरियल्स, इम्प्लांट्स, बायोफिजिक्स, कैंसर की शुरुआती पहचान, इम्यूनो-टेक्नोलॉजी और क्लिनिकल बायोमार्कर जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान की संभावनाएं हैं।

इन प्रयासों का व्यापक उद्देश्य चिकित्सा क्षेत्र में नई तकनीकों के विकास को बढ़ावा देना और अनुसंधान को वास्तविक मरीजों की जरूरतों से जोड़ना है।

आईआईटी कानपुर: गंगवाल स्कूल ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी

आईआईटी कानपुर का गंगवाल स्कूल ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी चिकित्सा शिक्षा, उच्च स्तरीय चिकित्सा अनुसंधान और इंजीनियरिंग तकनीक को एक मंच पर लाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है।

इस प्रकार के संस्थानों में भविष्य की चिकित्सा तकनीकों के विकास, उन्नत डायग्नोस्टिक प्रणालियों, मेडिकल रोबोटिक्स, बायोमेडिकल उपकरणों और एआई आधारित स्वास्थ्य सेवाओं पर काम करने की व्यापक संभावनाएं हैं।

इसका उद्देश्य केवल नई मशीनें बनाना नहीं है, बल्कि यह समझना भी है कि मरीजों की वास्तविक जरूरतों के अनुसार तकनीक को कैसे अधिक उपयोगी, सुरक्षित और प्रभावी बनाया जा सकता है।

क्या भविष्य में मेडिकल इंजीनियरों की मांग बढ़ेगी?

चिकित्सा विज्ञान में तकनीकी बदलावों के कारण ऐसे विशेषज्ञों की मांग बढ़ने की संभावना है, जिन्हें बायोमेडिकल इंजीनियरिंग, मेडिकल इमेजिंग, मेडिकल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बायोइन्फॉर्मेटिक्स, रोबोटिक्स और स्वास्थ्य उपकरणों के डिजाइन का ज्ञान हो।

इन क्षेत्रों में प्रशिक्षित विशेषज्ञ अस्पतालों, चिकित्सा उपकरण बनाने वाली कंपनियों, अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों और स्वास्थ्य तकनीक से जुड़ी कंपनियों में काम कर सकते हैं।

यह समझना आवश्यक है कि मेडिकल इंजीनियरिंग और एमबीबीएस अलग-अलग शैक्षणिक तथा व्यावसायिक रास्ते हैं। इंजीनियरिंग की डिग्री अपने आप किसी व्यक्ति को मरीजों का निदान करने या उनका इलाज करने का अधिकार नहीं देती। इसी प्रकार, डॉक्टरों को भी चिकित्सा अभ्यास के लिए निर्धारित योग्यताओं और नियमों का पालन करना होता है।

भारत के लिए स्वदेशी मेडिकल टेक्नोलॉजी क्यों महत्वपूर्ण है?

भारत में चिकित्सा उपकरणों और स्वास्थ्य तकनीक के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बढ़ाने की आवश्यकता है। आधुनिक स्कैनर, वेंटिलेटर, पेसमेकर और जीवन रक्षक प्रणालियों जैसे उपकरणों के विकास, निर्माण और रखरखाव में घरेलू क्षमता मजबूत होने से आयात पर निर्भरता कम करने में मदद मिल सकती है।

इसके अतिरिक्त, देश की परिस्थितियों के अनुरूप सस्ती और भरोसेमंद तकनीक विकसित की जा सकती है। ग्रामीण अस्पतालों, छोटे स्वास्थ्य केंद्रों और दूरदराज के क्षेत्रों में ऐसी तकनीक विशेष रूप से उपयोगी हो सकती है।

यदि भारतीय संस्थान चिकित्सा विशेषज्ञों, इंजीनियरों और उद्योगों के बीच सहयोग बढ़ाते हैं, तो नई खोजों को प्रयोगशालाओं से अस्पतालों तक पहुंचाने में मदद मिल सकती है।

दुनिया से क्या सीख सकते हैं?

अमेरिका का मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी इंजीनियरिंग, कंप्यूटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और चिकित्सा तकनीक के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए प्रसिद्ध है। एमआईटी स्वयं पारंपरिक मेडिकल स्कूल की तरह एमबीबीएस की डिग्री देने वाला संस्थान नहीं है, लेकिन चिकित्सा संस्थानों और अनुसंधानकर्ताओं के साथ सहयोग करके स्वास्थ्य सेवाओं के लिए नई तकनीक विकसित करने में योगदान देता है।

यह उदाहरण बताता है कि चिकित्सा विज्ञान में प्रगति के लिए डॉक्टरों, इंजीनियरों, वैज्ञानिकों और तकनीकी विशेषज्ञों का सहयोग कितना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

आईआईटी मद्रास, आईआईटी खड़गपुर और आईआईटी कानपुर की पहल भारत में चिकित्सा विज्ञान और इंजीनियरिंग के बीच बढ़ते संबंधों को दर्शाती है। भविष्य की स्वास्थ्य सेवाओं में केवल बेहतर डॉक्टर और बेहतर मशीनें ही पर्याप्त नहीं होंगी; ऐसी तकनीक भी जरूरी होगी जिसे मरीजों की वास्तविक जरूरतों को ध्यान में रखकर विकसित किया गया हो।

इन संस्थानों के प्रयास चिकित्सा अनुसंधान, स्वदेशी उपकरण निर्माण और स्वास्थ्य तकनीक में नए अवसर पैदा कर सकते हैं। विद्यार्थियों के लिए भी यह एक उभरता हुआ क्षेत्र है, जिसमें विज्ञान, गणित, इंजीनियरिंग और मानव स्वास्थ्य के प्रति रुचि रखने वाले युवाओं को नए रास्ते मिल सकते हैं।

भविष्य की चिकित्सा में डॉक्टर और इंजीनियर एक-दूसरे के विकल्प नहीं, बल्कि सहयोगी होंगे। यही सहयोग अधिक सटीक निदान, बेहतर उपचार और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल। प्रख्यात वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर., मलोट, पंजाब – 152107

वेस्ट मैनेजमेंट: कचरे से रोजगार और उद्यमिता के नए अवसर

डॉ. विजय गर्ग

कचरा प्रबंधन अब केवल कूड़ा इकट्ठा करने और उसे ठिकाने लगाने तक सीमित नहीं रह गया है। यह रोजगार, उद्यमिता, नवाचार और पर्यावरण संरक्षण के नए अवसर प्रदान करने वाला एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बन चुका है। बढ़ती जनसंख्या, शहरों के विस्तार और उपभोग में वृद्धि के कारण घरों, उद्योगों, बाजारों तथा संस्थानों से निकलने वाले कचरे की मात्रा लगातार बढ़ रही है। यदि इसका वैज्ञानिक ढंग से प्रबंधन किया जाए, तो यही कचरा मूल्यवान संसाधन और सतत आर्थिक विकास का आधार बन सकता है।

कचरे को खुले स्थानों पर फेंकना, लैंडफिल में जमा करना या जलाना पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर समस्याएँ पैदा करता है। इससे वायु प्रदूषण, भूजल का दूषित होना, मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट और ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ता है। इसके विपरीत, सुव्यवस्थित कचरा प्रबंधन इन समस्याओं को कम करने के साथ-साथ हजारों लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी पैदा कर सकता है।

कचरा बोझ नहीं, एक संसाधन है

कचरा प्रबंधन का मूल सिद्धांत यह है कि अलग-अलग प्रकार के कचरे का निपटान उनकी प्रकृति के अनुसार किया जाना चाहिए। घरेलू कचरे में जैविक पदार्थ, कागज, प्लास्टिक, काँच, धातुएँ, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का कचरा और अन्य अनुपयोगी वस्तुएँ शामिल होती हैं। यदि इन्हें स्रोत पर ही अलग-अलग कर दिया जाए, तो इनमें से अनेक वस्तुओं का पुनः उपयोग, पुनर्चक्रण या नए उत्पाद बनाने में इस्तेमाल किया जा सकता है।

रसोईघरों, सब्जी मंडियों, होटलों और कृषि गतिविधियों से निकलने वाले जैविक कचरे से खाद तथा बायोगैस बनाई जा सकती है। जैविक खाद मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है और रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करने में मदद करती है। बायोगैस का उपयोग खाना पकाने, गर्मी उत्पन्न करने और कुछ औद्योगिक कार्यों में किया जा सकता है।

इसी प्रकार, कागज, प्लास्टिक, काँच और धातुओं को इकट्ठा करके, छाँटकर तथा संसाधित करके पुनर्चक्रण उद्योगों को उपलब्ध कराया जा सकता है। इससे कचरा संग्रहकर्ताओं, परिवहन कर्मचारियों, मशीन संचालकों, तकनीकी विशेषज्ञों और उद्यमियों के लिए रोजगार पैदा होता है।

पुनर्चक्रण: कारोबार का बढ़ता अवसर

पुनर्चक्रण कचरे से आय अर्जित करने के सबसे उपयोगी क्षेत्रों में से एक है। युवा उद्यमी छोटे संग्रह केंद्र स्थापित कर सकते हैं, जहाँ अनुपयोगी सामग्री खरीदी जाए, उसकी छँटाई की जाए और उसे पुनर्चक्रण इकाइयों तक पहुँचाया जाए। पर्याप्त प्रशिक्षण और निवेश से प्लास्टिक, कागज तथा धातुओं के प्रसंस्करण का व्यवसाय भी शुरू किया जा सकता है।

प्लास्टिक कचरे से पुनर्चक्रित दाने बनाए जा सकते हैं, जिनका उपयोग कुछ नए उत्पादों के निर्माण में होता है। पुराने कागज से पुनर्चक्रित कागज और पैकेजिंग सामग्री तैयार की जा सकती है। धातुओं के कबाड़ को उपयोगी कच्चे माल में बदलकर विनिर्माण उद्योगों में इस्तेमाल किया जा सकता है।

ऐसे व्यवसाय प्राकृतिक संसाधनों की बचत करते हैं और चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देते हैं। इस व्यवस्था में वस्तुओं और सामग्रियों को उपयोग के बाद फेंकने के बजाय यथासंभव लंबे समय तक उत्पादन प्रक्रिया में बनाए रखा जाता है। हालाँकि, पुनर्चक्रण के दौरान पर्यावरण और सुरक्षा संबंधी मानकों का पालन करना आवश्यक है।

जैविक खाद और बायोगैस उत्पादन

ग्रामीण क्षेत्रों और कृषि प्रधान समुदायों में जैविक कचरे के प्रबंधन से रोजगार की विशेष संभावनाएँ पैदा हो सकती हैं। किसान, स्वयं सहायता समूह, सहकारी संस्थाएँ और युवा उद्यमी कृषि अवशेषों, पशुओं के गोबर, रसोई के कचरे तथा बगीचों से निकलने वाली सामग्री का उपयोग करके खाद बनाने की इकाइयाँ स्थापित कर सकते हैं।



तैयार खाद किसानों, नर्सरियों, बागवानी केंद्रों और उद्यानों की देखभाल करने वाले व्यवसायों को बेची जा सकती है। छोटे बायोगैस संयंत्र उपयुक्त जैविक कचरे से नवीकरणीय ऊर्जा पैदा कर सकते हैं। नगर निकायों, विद्यालयों, होटलों और आवासीय समितियों के सहयोग से स्थानीय स्तर पर कचरा प्रसंस्करण केंद्र स्थापित किए जा सकते हैं। इससे परिवहन खर्च कम होगा और स्थानीय लोगों को काम मिलेगा।

ई-वेस्ट: रोजगार का उभरता क्षेत्र

डिजिटल तकनीक के तेजी से प्रसार के कारण मोबाइल फोन, कंप्यूटर, टेलीविजन, बैटरियों और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का कचरा बढ़ रहा है। इस कचरे में तांबा, एल्युमीनियम और कुछ मूल्यवान धातुएँ होती हैं। लेकिन इसमें मौजूद हानिकारक पदार्थों के कारण गलत तरीके से निपटान करने पर मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण को नुकसान पहुँच सकता है।

इस क्षेत्र में अधिकृत ई-वेस्ट संग्रह केंद्र, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की मरम्मत, पुराने उपकरणों को फिर से उपयोग योग्य बनाने वाले व्यवसाय और विशेष पुनर्चक्रण इकाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं। मरम्मत और नवीनीकरण से उपकरणों का जीवन बढ़ता है तथा लोगों को कम कीमत पर तकनीक उपलब्ध हो सकती है।

ई-वेस्ट का प्रबंधन अधिकृत केंद्रों के माध्यम से और उचित सुरक्षा उपायों के साथ किया जाना चाहिए। असुरक्षित तरीके से उपकरणों को तोड़ना या हानिकारक रसायनों से धातुएँ निकालना स्वास्थ्य के लिए जोखिमपूर्ण है।

युवा, कौशल विकास और हरित उद्यमिता

आधुनिक कचरा प्रबंधन केवल शारीरिक श्रम तक सीमित नहीं है। इसके लिए पर्यावरण विज्ञान, इंजीनियरिंग, परिवहन प्रबंधन, डिजिटल तकनीक और व्यवसाय संचालन से जुड़े कुशल लोगों की भी आवश्यकता है।

युवा ऐसे मोबाइल ऐप विकसित कर सकते हैं, जो घरों को पुनर्चक्रण केंद्रों से जोड़ें। वे कचरा संग्रह की डिजिटल निगरानी, पुनः उपयोग योग्य पैकेजिंग के निर्माण और बेकार सामग्री से नए उत्पाद तैयार करने जैसे कार्यों में योगदान दे सकते हैं। विद्यालयों, कार्यालयों, बाजारों और उद्योगों को कचरा प्रबंधन संबंधी सेवाएँ तथा परामर्श भी दिया जा सकता है।

कौशल विकास कार्यक्रम, व्यावसायिक शिक्षा, उद्यमिता प्रशिक्षण और सुलभ वित्तीय सहायता युवाओं को अपने विचारों को सफल व्यवसायों में बदलने में मदद कर सकते हैं। महिला स्वयं सहायता समूह भी जैविक खाद, कपड़े के थैले और पुनर्चक्रण से संबंधित कार्यों के माध्यम से आय अर्जित कर सकते हैं।

सरकार और समाज की भूमिका

प्रभावी कचरा प्रबंधन के लिए सरकार, उद्योगों, शैक्षणिक संस्थानों, व्यवसायियों और नागरिकों के बीच सहयोग आवश्यक है। स्थानीय निकायों को कचरे की पृथक छँटाई, नियमित संग्रह और अधिकृत पुनर्चक्रण व्यवसायों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

उद्योगों को अपने उत्पादों और पैकेजिंग से उत्पन्न कचरे के प्रति अधिक जिम्मेदारी निभानी चाहिए। जन-जागरूकता अभियान लोगों को कम उपभोग करने, वस्तुओं का पुनः उपयोग करने और घरों में गीले तथा सूखे कचरे को अलग रखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

विद्यालयों और महाविद्यालयों में खाद बनाने की इकाइयाँ, पुनर्चक्रण अभियान और व्यावहारिक पर्यावरण शिक्षा शुरू की जानी चाहिए। इससे विद्यार्थियों में जिम्मेदारी की भावना विकसित होगी और वे पर्यावरण संरक्षण को रोजगार तथा उद्यमिता से जोड़कर समझ सकेंगे।

निष्कर्ष

कचरा प्रबंधन पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच एक महत्त्वपूर्ण सेतु है। वैज्ञानिक तरीके से संभाला गया कचरा खाद, नवीकरणीय ऊर्जा, पुनर्चक्रित कच्चे माल और आजीविका का स्रोत बन सकता है।

नवाचार, निवेश, जनभागीदारी और जिम्मेदार व्यावसायिक गतिविधियों के माध्यम से भारत में हरित रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं। कचरे की छँटाई, पुनः उपयोग, मरम्मत और पुनर्चक्रण को बढ़ावा देकर प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव भी कम किया जा सकता है।

वास्तविक परिवर्तन कचरे के प्रति हमारी सोच बदलने से आएगा। हमें केवल यह नहीं सोचना चाहिए कि कचरे को कहाँ फेंका जाए, बल्कि यह भी समझना चाहिए कि उससे उपयोगी संसाधन कैसे प्राप्त किए जा सकते हैं। सही दृष्टिकोण अपनाकर हम कचरे को संपत्ति, बेरोजगारी को उद्यमिता और पर्यावरणीय चुनौतियों को सतत विकास के अवसरों में बदल सकते हैं।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल। प्रख्यात वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर., मलोट, पंजाब – 152107

लॉजिस्टिक्स क्षेत्र: युवाओं के लिए करियर और रोजगार के नए अवसर

डॉ. विजय गर्ग

आज की तेजी से बदलती अर्थव्यवस्था में लॉजिस्टिक्स क्षेत्र आर्थिक विकास, व्यापार और रोजगार सृजन के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक बनकर उभरा है। ई-कॉमर्स, ऑनलाइन खरीदारी, विनिर्माण, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और डिजिटल सेवाओं के विस्तार ने परिवहन, गोदाम प्रबंधन और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन (सप्लाई चेन मैनेजमेंट) की मांग में काफी वृद्धि की है। बेहतर करियर की तलाश कर रहे युवाओं के लिए यह क्षेत्र रोजगार के विविध अवसरों, व्यावसायिक उन्नति और स्वरोजगार की संभावनाओं के नए द्वार खोलता है।

लॉजिस्टिक्स का अर्थ है वस्तुओं को उनके उत्पादन स्थल से अंतिम उपभोक्ता तक पहुंचाने की योजना बनाना तथा उनके परिवहन, भंडारण और वितरण का उचित प्रबंधन करना। इसमें सड़क, रेल, हवाई और समुद्री परिवहन, भंडार प्रबंधन, पैकेजिंग, गोदाम संचालन, ऑर्डर तैयार करना और सामान की डिलीवरी जैसी गतिविधियां शामिल हैं। एक प्रभावी लॉजिस्टिक्स व्यवस्था यह सुनिश्चित करती है कि वस्तुएं सही समय पर, सही स्थान पर और उचित लागत पर पहुंचें। यह आधुनिक व्यापार और उद्योग की रीढ़ है।

तेजी से विकसित होता क्षेत्र

भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचे का विस्तार, विनिर्माण गतिविधियों में वृद्धि और ई-कॉमर्स की लोकप्रियता ने लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर पैदा किए हैं। ऑनलाइन खरीदारी के प्लेटफॉर्म, सुपरमार्केट, दवा कंपनियां, वाहन निर्माता, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और खुदरा व्यापार प्रभावी आपूर्ति श्रृंखला पर निर्भर करते हैं।

राष्ट्रीय राजमार्गों, माल परिवहन गलियारों, बंदरगाहों, हवाई अड्डों, लॉजिस्टिक्स पार्कों और बहु-माध्यम परिवहन सुविधाओं के विकास से इस क्षेत्र को और मजबूती मिल रही है। बुनियादी ढांचे के विकास, डिजिटल तकनीक और विनिर्माण को बढ़ावा देने वाली सरकारी पहलों ने भी प्रशिक्षित लॉजिस्टिक्स विशेषज्ञों की आवश्यकता बढ़ाई है।

तेज डिलीवरी, बेहतर भंडार नियंत्रण और कम लागत पर परिवहन की बढ़ती मांग के कारण आपूर्ति श्रृंखला के प्रत्येक चरण में कुशल कर्मचारियों की जरूरत है। इसलिए लॉजिस्टिक्स अब केवल ड्राइवरों, गोदाम कर्मचारियों और डिलीवरी कर्मियों तक सीमित नहीं है। यह तकनीक आधारित उद्योग बन चुका है, जिसमें प्रशिक्षित प्रबंधकों, विश्लेषकों, इंजीनियरों और डिजिटल विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है।

करियर के विविध अवसर

लॉजिस्टिक्स क्षेत्र का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसमें अलग-अलग शैक्षणिक योग्यताओं, रुचियों और कौशल वाले युवाओं के लिए अनेक करियर विकल्प उपलब्ध हैं।

१\. आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन: इस क्षेत्र के विशेषज्ञ खरीद, उत्पादन, भंडारण और वितरण की गतिविधियों में समन्वय स्थापित करते हैं। वे वस्तुओं की सुचारु आवाजाही सुनिश्चित करने और परिचालन लागत कम करने में सहायता करते हैं। व्यवसाय प्रशासन, वाणिज्य और सप्लाई चेन मैनेजमेंट के स्नातक इस क्षेत्र में करियर बना सकते हैं।

२\. परिवहन और वाहन बेड़ा प्रबंधन: परिवहन प्रबंधक डिलीवरी के मार्ग निर्धारित करते हैं, वाहनों के संचालन की निगरानी करते हैं, ईंधन की खपत पर नजर रखते हैं और समय पर सामान पहुंचाने की व्यवस्था करते हैं। परिवहन नियमों, मार्ग अनुकूलन और वाहनों की डिजिटल निगरानी का ज्ञान इस काम में उपयोगी है।

३\. गोदाम और भंडार प्रबंधन: गोदामों में वितरण से पहले वस्तुओं को सुरक्षित रखा जाता है। गोदाम पर्यवेक्षक, भंडार नियंत्रक, स्टॉक प्रबंधक और परिचालन अधिकारी वस्तुओं के उचित रखरखाव तथा समय पर प्रेषण को सुनिश्चित करते हैं। भंडार प्रबंधन सॉफ्टवेयर और स्वचालित प्रणालियों का ज्ञान करियर की संभावनाओं को बढ़ा सकता है।

४\. ई-कॉमर्स और अंतिम चरण की डिलीवरी: ऑनलाइन खरीदारी के विस्तार से ऑर्डर तैयार करने, सामान भेजने, डिलीवरी का समन्वय करने, लौटाए गए उत्पादों का प्रबंधन करने और ग्राहक सेवा में रोजगार के अवसर बढ़े हैं। विभिन्न शैक्षणिक योग्यताओं वाले युवा इन पदों से अपने करियर की शुरुआत कर सकते हैं।

५\. अंतरराष्ट्रीय व्यापार और फ्रेट फॉरवर्डिंग: आयात-निर्यात कंपनियों को ऐसे विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है जिन्हें माल भेजने की प्रक्रियाओं, सीमा शुल्क संबंधी दस्तावेजों, कार्गो प्रबंधन और अंतरराष्ट्रीय व्यापार नियमों की जानकारी हो। अंतरराष्ट्रीय व्यापार और लॉजिस्टिक्स से संबंधित पाठ्यक्रम इस क्षेत्र में लाभदायक हो सकते हैं।

६\. तकनीक और डेटा विश्लेषण: आधुनिक लॉजिस्टिक्स में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), GPS ट्रैकिंग, स्वचालित गोदाम, रोबोटिक्स और डेटा विश्लेषण का उपयोग बढ़ रहा है। परिवहन लागत का विश्लेषण करने, मांग का अनुमान लगाने और डिलीवरी को अधिक प्रभावी बनाने वाले विशेषज्ञों की उपयोगिता लगातार बढ़ रही है।

शैक्षणिक योग्यता और आवश्यक कौशल

लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में स्कूली शिक्षा पूरी करने वाले विद्यार्थियों, डिप्लोमा धारकों, स्नातकों और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए अवसर उपलब्ध हैं। कुछ प्रारंभिक पदों पर सामान्य शैक्षणिक योग्यता के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण के आधार पर भी काम मिल सकता है। लॉजिस्टिक्स, परिवहन, गोदाम प्रबंधन और आपूर्ति श्रृंखला से संबंधित डिप्लोमा तथा प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम युवाओं को उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार कर सकते हैं।

वाणिज्य, प्रबंधन, इंजीनियरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी और अर्थशास्त्र के स्नातक इस क्षेत्र में विशेष पाठ्यक्रम या स्नातकोत्तर कार्यक्रम कर सकते हैं। व्यावसायिक प्रशिक्षण और अप्रेंटिसशिप के माध्यम से भी व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया जा सकता है।

औपचारिक योग्यता के अतिरिक्त संवाद कौशल, टीमवर्क, समस्या समाधान, समय प्रबंधन और निर्णय लेने की क्षमता भी आवश्यक हैं। डिजिटल साक्षरता विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि अनेक कंपनियां सामान की ट्रैकिंग, स्टॉक का रिकॉर्ड रखने और ऑर्डर प्रबंधन के लिए विशेष सॉफ्टवेयर का उपयोग करती हैं।

स्वरोजगार और उद्यमिता

लॉजिस्टिक्स क्षेत्र युवाओं को अपना व्यवसाय शुरू करने के अवसर भी प्रदान करता है। छोटे उद्यमी स्थानीय डिलीवरी सेवाओं, परिवहन समन्वय, पैकेजिंग, कूरियर फ्रेंचाइजी, गोदाम सहायता और विशेष वितरण सेवाओं में काम शुरू कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, परिवहन संचालकों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों को जोड़ने वाले डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित करने की संभावनाएं भी हैं।

हालांकि, लॉजिस्टिक्स व्यवसाय शुरू करने के लिए उचित योजना, बाजार का अध्ययन, वित्तीय प्रबंधन और संबंधित नियमों का पालन आवश्यक है। युवा उद्यमियों को छोटे स्तर से शुरुआत करके अनुभव और ग्राहकों की संख्या बढ़ने के साथ अपने व्यवसाय का विस्तार करना चाहिए।

चुनौतियां और आगे की राह

बेहतर संभावनाओं के बावजूद इस क्षेत्र में कई चुनौतियां हैं। कुछ पदों पर लंबे कार्य घंटे, बुनियादी ढांचे की कमियां, परिचालन लागत, कर्मचारियों की सुरक्षा और तेजी से डिलीवरी करने का दबाव प्रमुख समस्याएँ हैं। स्वचालन के कारण कुछ पारंपरिक नौकरियों के स्वरूप में भी बदलाव आ सकता है। इसलिए लगातार नए कौशल सीखना आवश्यक है।

शैक्षणिक संस्थानों, प्रशिक्षण केंद्रों और उद्योगों को मिलकर व्यावहारिक प्रशिक्षण, इंटर्नशिप और उद्योग आधारित पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने चाहिए। कार्यस्थल पर सुरक्षा, उचित वेतन, व्यावसायिक प्रमाणन और करियर में उन्नति के अवसरों पर भी ध्यान देना जरूरी है। युवाओं को किसी पाठ्यक्रम या नौकरी के लिए पैसा खर्च करने से पहले प्रशिक्षण संस्थान और रोजगार प्रस्ताव की विश्वसनीयता की जांच करनी चाहिए।

निष्कर्ष

लॉजिस्टिक्स क्षेत्र युवाओं को ऐसे उद्योग में करियर बनाने का अवसर प्रदान करता है, जो देश के आर्थिक विकास में प्रत्यक्ष योगदान देता है। परिवहन और गोदाम प्रबंधन से लेकर अंतरराष्ट्रीय व्यापार, प्रबंधन और आधुनिक तकनीक तक, इस क्षेत्र में रोजगार की व्यापक संभावनाएँ हैं। सही शिक्षा, व्यावहारिक अनुभव, डिजिटल कौशल और निरंतर सीखने की इच्छा के साथ युवा अच्छा रोजगार प्राप्त कर सकते हैं और भविष्य में उच्च प्रबंधकीय पदों तक पहुंच सकते हैं। उद्यमिता में रुचि रखने वाले युवाओं के लिए भी यह क्षेत्र अपना व्यवसाय स्थापित करने के अवसर प्रदान करता है।

दान के लिए धन नहीं, कर्म ही काफी है - बस की सीट से ईश्वर तक

गरीब महिला ने 4 बार सीट देकर सिखाया कर्मदान का पाठ, अध्यापिका की आँखों में आँसू - परिवहन विशेष प्रेरक कथा

पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता - परिवहन विशेष प्रेरणा ब्यूरो

यह कहानी हर बस में रोज घटती है, पर उसका अर्थ बहुत गहरा है।

संदेश:

>"दान देने के लिए धन नहीं है कोई बात नहीं, हवन यज्ञ करने के लिए धन नहीं है कोई बात नहीं, भंडारा करने के लिए धन नहीं है कोई बात नहीं, किसी भूखे को खाना खिलाने के लिए धन नहीं है कोई बात नहीं, लेकिन जो मैं आपको बता रहा हूँ यदि आपने यह कर लिया तो ईश्वर आपसे प्रसन्न हो जाएंगे।"

कहानी: एक गरीब महिला बस में चढ़ी - कपड़े पुराने और फटे हुए, बाल बिखरे, शरीर से कमजोर। जैसे ही सीट मिली, वह चुपचाप बैठ गई।

1. पहला दान: स्टॉप पर एक वृद्ध महिला चढ़ी। गरीब महिला ने बिना देर किए अपनी सीट दे दी और खुद खड़ी हो गई। वृद्ध के उतरने पर वापस बैठ गई।

2. दूसरा दान: थोड़ी देर बाद एक छोटी बच्ची चढ़ी, स्कूल बैग लिए। उसे खड़ा देख फिर से सीट दे दी, खुद खड़ी हो गई। बच्ची का स्टॉप आने पर वापस बैठ गई।

3. तीसरा दान: फिर एक गर्भवती महिला आई। इस बार भी बिना सोचे सीट दे दी। गर्भवती के उतरने पर फिर बैठ गई।

4. चौथा दान - जो सबसे बड़ा था: इसके बाद एक सामान्य महिला चढ़ी - न वृद्ध, न बच्ची, न गर्भवती, पूरी तरह स्वस्थ। फिर भी गरीब ने अपनी सीट छोड़ दी और उस महिला को बैठा दिया।

बस में बैठी अध्यापिका का आश्चर्य: बस में बैठी एक अध्यापिका यह सब देखकर बहुत आश्चर्यचकित हुई। उसने सोचा वृद्ध, बच्ची और गर्भवती के लिए सीट छोड़ना समझ में आता है, लेकिन सामान्य महिला के लिए बार-बार सीट छोड़ने का क्या कारण हो सकता है?

बस जब आखिरी स्टॉप पर पहुंची तो अध्यापिका ने पूछा - 'बहन मैंने देखा आप बार-बार अपनी सीट दूसरों को दे देती हैं, आपका भी उतना ही हक है सीट पर बैठने का, फिर आप क्यों खड़ी हो जाती हैं?

गरीब महिला का जवाब - पूरे लेख की आत्मा वह मुस्कुराई और बोली - मैडम मैं दूसरों के घरों में बर्तन साफ करती हूँ, खाना बनाती हूँ, झाड़ू-पोंछा करती हूँ। मेरे पास अधिक धन नहीं है कि मैं किसी को दान दे सकूं, भंडारा कर सकूं, हवन यज्ञ कर सकूं या किसी भूखे को भोजन करवा सकूं। लेकिन मेरे पास मेरे कर्म हैं और मैं अपने कर्मों से दान करने की कोशिश करती हूँ।

मेरे अच्छे कर्म ही मेरे ईश्वर के खाते में बैंक बैलेंस बढ़ा रहे हैं। इन्हीं कर्मों के कारण मेरा परिवार सुखी है, मेरे बच्चे पढ़ाई करते हैं, मेरा पति मेहनती और समझदार है। हमारे पास बहुत अधिक नहीं है पर जो है हम खुश हैं। जब मैं अपने आसपास देखती हूँ तो पाती हूँ लोग कितने दुखी हैं लेकिन मेरे अच्छे कर्मों की वजह से दुख मेरे जीवन में नहीं आता।

उस महिला की बातों से अध्यापिका की आँखों में आँसू आ गए। उसने कहा - मैं स्कूल में बच्चों को शिक्षा देती हूँ पर आज असली शिक्षा तो तुमने मुझे दी है, आज से तुम मेरी शिक्षिका हो।

सीख - आपके लिए:

1. सेवा के लिए धन की आवश्यकता नहीं, छोटे-छोटे कर्म ही कर्मदान हैं

2. किसी को सड़क पार करवा देना, किसी जरूरतमंद की सहायता, किसी को प्रेम से मुस्कुरा देना - यही सबसे बड़ा दान

3. जब हम दूसरों के जीवन में खुशी लाते हैं तो वह खुशी हमारे जीवन में लौटकर आती है

4. हमारे दादा जी कहते थे - 'अपने अच्छे वक्त में बुरे वक्त की तैयारी करो और बुरे वक्त में अच्छे वक्त की, जब अच्छा समय हो तो लोगों की इतनी मदद करो कि बुरा समय कभी आए ही ना।'

परिवहन विशेष की टिप्पणी:

DTC, क्लस्टर बसों में रोज यही होता है। सीट के लिए लड़ाई आम है, पर यह महिला सिखाती है कि सीट देना ही सबसे बड़ा भंडारा है। अगली बार बस में आप भी किसी वृद्ध, बच्ची, गर्भवती या थके हुए सहयात्री को सीट दें - वही आपका हवन, यज्ञ और दान है।



27 अक्टूबर को खुलेगा प्रत्याशियों की किस्मत का पिटारा



परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। गोरखपुर-फैजाबाद खंड शिक्षक निर्वाचन के लिए मतदान संपन्न होने के बाद 17 जिलों के 200 मतदेय स्थलों की मतपेटियों को दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के वाणिज्य संकाय में बने स्ट्रांग रूम में सुरक्षित रखकर सीलबंद कर दिया गया है। स्ट्रांग रूम के बाहर सुरक्षा बल मुस्तैद हैं और लगातार निगरानी कर रहे हैं।

23 अक्टूबर को हुए मतदान में कुल 54,910 मतदाताओं में से 43,433 शिक्षकों ने वोट डाला, जो 79.1 प्रतिशत रहा। मतदान के बाद सभी मतपेटियों को सुरक्षा व्यवस्था के बीच विश्वविद्यालय लाया गया। अब 27 अक्टूबर को कड़ी सुरक्षा में स्ट्रांग रूम खोला जाएगा और मतगणना होगी। मतगणना के बाद ही तय होगा कि शिक्षक मतदाताओं ने किस प्रत्याशी पर भरोसा जताया है।

जामिया में छात्रसंघ की बहाली के लिए पारदर्शी और समयबद्ध कार्ययोजना घोषित की जाए: शाहिद अली एडवोकेट

परिवहन विशेष न्यूज



नई दिल्ली: केकेसी कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव शाहिद अली एडवोकेट ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया में जारी छात्र आंदोलन के मद्देनजर विश्वविद्यालय प्रशासन से छात्रसंघ की बहाली और छात्रों के लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए तत्काल कदम उठाने की अपील की है। उन्होंने कहा कि जामिया की ऐतिहासिक परंपरा लोकतांत्रिक मूल्यों, छात्र प्रतिनिधित्व और शांतिपूर्ण असहमति के अधिकार का सम्मान करने की मांग करती है।

शाहिद अली एडवोकेट ने कहा कि छात्रसंघ किसी भी शैक्षणिक संस्थान में छात्रों की आवाज प्रशासन तक पहुंचाने और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए एक महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक मंच होता है। छात्रों को अपनी शिकायतें रखने, शैक्षणिक मामलों पर राय देने और अपने अधिकारों के लिए शांतिपूर्ण तरीके से आवाज उठाने का उचित अवसर मिलना चाहिए।

उन्होंने कहा कि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और दिल्ली विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों में छात्रसंघ के चुनाव कराए जाते हैं। इसी तरह जामिया मिल्लिया इस्लामिया में भी विश्वविद्यालय के नियमों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए पारदर्शी, निष्पक्ष और समयबद्ध चुनाव व्यवस्था तैयार की जा सकती है।

शाहिद अली एडवोकेट ने मांग की कि छात्रसंघ चुनाव के लिए स्पष्ट समयसीमा के साथ कार्ययोजना घोषित की जाए। प्रदर्शनकारी छात्रों के खिलाफ की गई अनुशासनात्मक कार्रवाइयों और कैंपस से संबंधित प्रतिबंधों की निष्पक्ष समीक्षा की जाए तथा छात्रों और विश्वविद्यालय प्रशासन के बीच तत्काल सार्थक बातचीत शुरू की जाए।

उन्होंने भूख हड़ताल पर बैठे छात्रों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को प्राथमिकता देने की अपील करते हुए कहा कि उन्हें उचित चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराना आवश्यक है। किसी भी समस्या का स्थायी समाधान दंडात्मक कार्रवाई के बजाय संवाद, आपसी समझ और पारस्परिक सम्मान के माध्यम से ही संभव है।

शाहिद अली एडवोकेट ने आगे कहा कि विश्वविद्यालय केवल डिग्री प्रदान करने के केंद्र नहीं हैं, बल्कि लोकतांत्रिक चेतना, स्वतंत्र विचार और भविष्य का नेतृत्व तैयार करने वाले महत्वपूर्ण संस्थान भी हैं। छात्रसंघ की बहाली से छात्रों के अधिकारों की रक्षा, प्रशासनिक जवाबदेही और कैंपस में लोकतांत्रिक माहौल को मजबूत बनाने में मदद मिलेगी।

उन्होंने विश्वविद्यालय प्रशासन से अपील की कि वह जामिया की ऐतिहासिक परंपराओं और लोकतांत्रिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए छात्रों की मांगों पर गंभीरता से विचार करे, उनका विश्वास बहाल करे और मौजूदा स्थिति का शांतिपूर्ण एवं सकारात्मक समाधान निकालने के लिए बिना देरी आवश्यक कदम उठाए।

कटघरे में सत्ता की नैतिकता, फैसला अदालत के हाथ

कुमार कृष्णन

लोकतंत्र में किसी मुख्यमंत्री की सबसे बड़ी कसौटी केवल चुनाव जीतकर सत्ता में पहुंचना नहीं बल्कि सत्ता में रहते हुए कानून, संवैधानिक मर्यादाओं और सार्वजनिक जवाबदेही के प्रति अपनी प्रतिबद्धता साबित करना भी है। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के खिलाफ रांची की विशेष धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) अदालत में बरगाईं की 8.86 एकड़ जमीन से जुड़े मामले में आरोप तय होना इसी व्यापक सवाल को सामने लाता है। मामला अब मुकदमे के अगले चरण में प्रवेश कर चुका है। लेकिन इस घटनाक्रम को समझने के लिए दो बातों को एक साथ याद रखना जरूरी है—आरोपों की गंभीरता और न्यायिक प्रक्रिया में आरोपी की बेगुनाही की कानूनी धारणा।

30 सितंबर 2026 को रांची की विशेष पीएमएलए अदालत ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के खिलाफ धनशोधन मामले में आरोप तय किए। वे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए अदालत में उपस्थित हुए और उन्होंने अपने ऊपर लगाए गए आरोपों को गलत बताते हुए खुद को बेगुनाह कहा। अदालत ने अभियोजन पक्ष को गवाह और साक्ष्य पेश करने की प्रक्रिया आगे बढ़ाने का निर्देश दिया। अगली सुनवाई के लिए 30 नवंबर की तारीख निर्धारित की गई है। इस मामले में सोरेन से पहले 16 अन्य आरोपियों के खिलाफ आरोप तय किए जा चुके थे।

यहां एक बुनियादी कानूनी अंतर समझना जरूरी है। अदालत द्वारा आरोप तय किए जाने का अर्थ यह नहीं है कि आरोपी दोषी साबित हो गया। इसका अर्थ है कि अदालत ने उपलब्ध सामग्री के आधार पर मुकदमे को आगे बढ़ाने का चरण पार किया है। अब अभियोजन पक्ष को अपने आरोपों के समर्थन में साक्ष्य प्रस्तुत करने होंगे, गवाहों के बयान दर्ज होंगे और बचाव पक्ष को उन पर सवाल उठाने का अवसर मिलेगा। अंतिम निर्णय न्यायिक परीक्षण के बाद ही होगा। इसलिए आरोप तय होने को दोषसिद्धि मान लेना न्यायिक प्रक्रिया की गलत व्याख्या होगी।

मामला रांची के बरगाईं अंचल में स्थित 8.86 एकड़ जमीन के कथित अवैध अधिग्रहण और उससे जुड़े धनशोधन के आरोपों से संबंधित है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) का दावा है कि जमीन के रिकॉर्ड में हेरफेर और जाली दस्तावेजों के इस्तेमाल के जरिए संपत्ति पर अवैध कब्जे का रास्ता बनाया गया। जांच एजेंसी ने कथित तौर पर जमीन के दस्तावेजों में गड़बड़ी और निजी व्यक्तियों तथा सरकारी कर्मचारियों से जुड़े नेटवर्क की भूमिका की जांच की है। ये अभियोजन पक्ष के आरोप हैं, जिन्हें मुकदमे में साक्ष्यों के आधार पर साबित किया जाना है। सोरेन इन आरोपों को खारिज करते रहे हैं।

इस मामले की जड़ में केवल जमीन का एक भूखंड नहीं, बल्कि भूमि अभिलेखों की विश्वसनीयता और प्रशासनिक व्यवस्था की जवाबदेही का प्रश्न भी है। जमीन के दस्तावेज किसी नागरिक की संपत्ति, आजीविका और कानूनी अधिकारों का आधार होते हैं। यदि अभिलेखों में हेरफेर करके जमीन पर अवैध कब्जे की कोशिश होती है, तो नुकसान केवल किसी एक व्यक्ति का नहीं होता। इससे राजस्व व्यवस्था, सरकारी संस्थाओं और कानून के शासन पर लोगों का भरोसा प्रभावित होता है। इसलिए अदालत में यह स्पष्ट होना जरूरी है कि कथित गड़बड़ी कैसे हुई, किन लोगों की क्या भूमिका थी और उपलब्ध साक्ष्य किस निष्कर्ष की ओर संकेत करते हैं।

हेमंत सोरेन के वकीलों ने अदालत में आरोपों को स्वीकार नहीं किया और मुकदमे का सामना करने की बात कही। बचाव पक्ष ने पीएमएलए की धारा 44(1)(d) की संवैधानिक वैधता से संबंधित याचिका भी झारखंड उच्च न्यायालय में दायर की है। इस कानूनी चुनौती और विशेष अदालत में चल रहे मुकदमे की प्रक्रिया को अलग-अलग समझना चाहिए। किसी प्रावधान की संवैधानिक वैधता पर सवाल उठाना आरोपी का कानूनी अधिकार है। दूसरी ओर, जब तक सक्षम अदालत कार्यवाही पर रोक नहीं लगाती, निचली अदालत में मुकदमे की प्रक्रिया अपने निर्धारित रास्ते पर आगे बढ़ सकती है। उच्च न्यायालय में याचिका दायर होना अपने आप में आरोपों से मुक्ति या मुकदमे पर रोक के बराबर नहीं है।

इस घटनाक्रम के बाद झारखंड की राजनीति में मुख्यमंत्री के इस्तीफे की मांग भी तेज हुई है। भाजपा के मुख्य प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने नैतिक आधार पर सोरेन से पद छोड़ने की मांग की। उन्होंने आशंका जताई कि मुख्यमंत्री पद पर बने रहने से गवाहों को प्रभावित करने या सबूतों के साथ छेड़छाड़ की संभावना पैदा हो सकती है। विधानसभा में विपक्ष के नेता बाबूलाल मरांडी ने कहा कि मुख्यमंत्री को अदालत में तथ्यों के आधार पर अपना पक्ष रखना चाहिए। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता आर. पी. सिंह ने भी मामले को सरकारी जमीन से जुड़े कथित घोटाले के रूप में उठाया। इसके विपरीत, पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा ने न्यायिक प्रक्रिया और सक्षम जांच एजेंसियों पर भरोसा रखने तथा न्यायालय के फैसलों पर अनावश्यक सार्वजनिक टिप्पणी से बचने की बात कही।

राजनीतिक दलों की प्रतिक्रियाओं में उनके अपने दृष्टिकोण और हित दिखाई देना स्वाभाविक है। विपक्ष का काम सरकार से सवाल पूछना और जवाबदेही की मांग करना है। लेकिन किसी राजनीतिक आरोप को न्यायालय का अंतिम निष्कर्ष मान लेना उचित नहीं। इसी तरह सत्ता पक्ष या मुख्यमंत्री के समर्थकों का केवल राजनीतिक प्रतिशोध का तर्क देकर हर सवाल को खारिज कर देना भी पर्याप्त नहीं होगा। लोकतंत्र में जांच एजेंसियों की कार्रवाई की निष्पक्षता पर सवाल उठाए जा सकते हैं, लेकिन उन सवालों का उत्तर तथ्यों, कानूनी समीक्षा और पारदर्शी प्रक्रिया से आना चाहिए।

राजनैतिक व्यंग्य-समागम : 1. झूठ और पाखंड : विष्णु नागर

भारत में इस समय विरोध की जो जबर्दस्त लहर चल रही है, उससे नरेन्द्र मोदी और मोहन भागवत एक समान घबराए हुए हैं, क्योंकि दोनों के हित समान हैं। एक के बगैर दूसरा अपंग है।

नरेन्द्र मोदी के बाद अब भागवत जी साफ़-साफ़ कह रहे हैं कि हमें आंदोलनों से सावधान रहना होगा। इन्हें ये आंदोलनकारी विध्वंसक दिखाई देने लगे हैं, जबकि इस मोड़ पर आंदोलन शांतिपूर्ण ढंग से चल रहा है।

इनका कहना है कि ये ताकतें समाज में विभाजन बढ़ाना चाहती हैं। राजनीतिक हथियार की तरह इनका इस्तेमाल कर रही हैं। जिनका खुद का रिकॉर्ड देश में नफ़रत फैलाने का रहा है, उनके मुंह से ये बातें पाखंडपूर्ण और हास्यास्पद लगती हैं। भागवत जी अपने दशहरा संबोधन में कहते हैं कि सरकार बदलने से स्थितियां नहीं बदलतीं। अच्छा ऐसी बात है क्या? इन्हें कौन बताएगा कि इन साढ़े बारह वर्षों में इनके सत्ता में आने के बाद स्थितियां बेहद बदली हैं, हर अर्थ में पहले से ज्यादा बदतर हुई हैं। अन्ना हजारे के नेतृत्व में संघ और भाजपा ने सत्ता परिवर्तन का खेल ही खेला था और उसमें ये सफल भी रहे और अब ये उपदेश दे रहे हैं कि सरकार बदलने से स्थितियां नहीं बदलतीं! इनके पाखंड और झूठ का कोई जवाब नहीं, कोई सीमा नहीं! इनका हर वाक्य झूठ और पाखंड का लबादा ओढ़े रहता है।

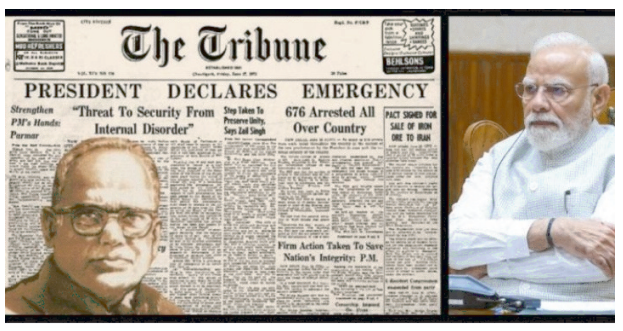
इनके शब्दाडंबर का कुल मतलब ये है कि जो चल रहा है, चलने दो। मोदी ने इसीलिए भागवत जी के कल के भाषण की ट्वीट करके तारीफ़ की है।

एक-दो बातों पर और गौर करें। हमेशा ये समाज में विभाजन बढ़ने से चिंतित रहते हैं। ये कहते नहीं हैं कि ये किस समाज की बात कर रहे हैं, मगर सब समझते हैं कि इनका आशय हिंदुओं से है। ये सौ साल से यह झूठ फैलाते आए हैं कि हिंदू समाज एक है। कोई भी धार्मिक समुदाय कभी संपूर्ण रूप से एक नहीं रहा, न कभी एक हो सकता है। हिंदुओं में तो भेद की, ऊंच-नीच की, अपमान की, नीचा दिखाने की इतनी लंबी परंपरा और परतें हैं कि शायद ही किसी अन्य धार्मिक समुदाय में हों। वैसे भी किसी धार्मिक समुदाय की एकता बहुत बड़ा झूठ है क्योंकि कोई समुदाय सिर्फ धार्मिक ही नहीं होता। उसमें भी अनेक तरह के हित होते हैं और हितों का टकराव भी होता है।

अगर 'हिंदू एकता' की बात सच होती, तो संघ को मुस्लिम समुदाय के खिलाफ अपनी तथाकथित हिंदू एकता को अपना आधार नहीं बनाना पड़ता। खासकर इन साढ़े बारह वर्षों में एकता के इनके झूठ का इतना अधिक पर्दाफाश हो चुका है कि संघ और भाजपा घबराई हुई है, क्योंकि मुस्लिम विरोधी हिंदू एकता का जो मोम का महल इन्होंने खड़ा किया था, उसमें आग लग चुकी है। वह धू-धू कर जलने लगा है।

एक इन्होंने यह झूठ फैलाने की कोशिश भी की है कि आज जो हो रहा है, उसके पीछे विदेशी ताकतें हैं। अगर ऐसा है, तो वे ताकतें कौन सी हैं? जरा उनका नाम तो लो और तुम्हारे पास तो सरकार है, अगर यह सच है, तो तथ्य सामने रखो। वैसे विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कल ही कहा है कि उनके पास इन आंदोलनकारियों को विदेशी धन मिलने की सरकार को कोई जानकारी नहीं है। वैसे भी अमेरिका, इस्राइल तो आपके भी पक्के दोस्त हैं। रूस आपका दुश्मन नहीं, दोस्त है और वह खुद युद्ध में फंसा हुआ है। चीन ने हमारी जमीन हड़प रखी है, फिर भी आप उससे दोस्ती बढ़ाने के लिए लालायित हो। उधर पूरा यूरोप खुद विरोध की आग में धू-धू कर जल रहा है। फ्रांस, स्पेन, इटली, बेल्जियम, पुर्तगाल, अल्बानिया, सर्बिया सब जल रहे हैं और यह आग भारत में विरोध की आग से ज्यादा उन देशों की सरकारों के लिए चिंताजनक है। वहां हिंसा भी हो रही है।

(कई पुरस्कारों से सम्मानित विष्णु नागर साहित्यकार और स्वतंत्र पत्रकार हैं। वे जनवादी लेखक संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी हैं।)



2. मोदी-जेपी संवाद: मेरी इमरजेंसी उनकी इमरजेंसी से काली कैसे!

(आलेख: राजेंद्र शर्मा)

स्वर्गीय लोगों का एक बड़ा एडवांटेज है। उनका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता है। न आग जला सकती है, न पानी गीला कर सकता है, न तलवार काट सकती है, वगैरह वाली बात शायद स्वर्गीय लोगों के लिए ही कही गई थी। जेल डरा नहीं सकती है, बस इतना और जोड़ लिया जाए, नए भारत के वास्ते अपडेटिंग के लिए।

और मोदी जी से यहीं गलती हो गई। बिना बात के जयप्रकाश नारायण उर्फ जेपी को छेड़ बैठे, जो जबतक स्वर्गीय नहीं हुए थे, तब भी जेल-वेल से नहीं डरते थे। 11 अक्टूबर की तारीख थी -- जंतर मंतर की अभूतपूर्व किलेबंदी, उस किलेबंदी को भेदने की कोशिशों में हजारों लोगों के पुलिस के लाठी-डंडों से बुरी तरह से पीटकर, हिरासत में लिए जाने और पत्रकारों के साथ भी जमकर यही सलूक किए जाने के बाद, अगला ही दिन।

सुबह-सुबह मोदी जी ने हैप्पी बर्थडे किया, तब तक तो जेपी भी 'हांठीक है, ठीक है की' मुद्रा के साथ चुपही बने रहे। पर मोदी ने जैसे ही यह कहना शुरू किया -- 'इमरजेंसी के दौर में अपकी निर्भीक आवाज' जेपी ने हाथ उठाकर उन्हें रोक दिया और करीब-करीब डांटते हुए कहने लगे -- क्या इमरजेंसी-इमरजेंसी लगा रखी है। इमरजेंसी के बारे में तुम जानते ही क्या हो? इमरजेंसी में या उसके पहले या बाद में कभी जेल का मुंह देखा होता, तो दूसरों को जेल में डालने का कम से कम इतना शौक नहीं होता।

मोदी जी कुछ भी बोल पाते, उससे पहले ही जेपी ने एक और शिकायत जड़ दी -- और यह कहां का सलीका है, पहले बापू के हाथ में झाड़ू पकड़ा कर उन्हें सफाई इंस्पेक्टर बनाकर छोड़ दिया और अब चले आए इमरजेंसी के बहाने मुझे इंदिरा का जानी दुश्मन बनाने के लिए। जब राष्ट्रपिता कहते-कहते देश को आजादी दिलाने वाले बापू को ही भुला दिया, तो मेरे जैसे बापू के सिपाहियों की तो तुम लोग क्या ही कद्र करोगे। तुम्हें क्या लगता है कि सब लोग बस तुम्हारे इस्तेमाल के लिए नैपकिन हैं, जैसे चाहा तोड़ा-मोड़ा, इस्तेमाल किया और फेंक दिया।

मोदी जी को बुरा तो बहुत लगा, पर खून का घूंट-सा पीकर रह गए। इस वक्त इंदिरा गांधी की इमरजेंसी की याद दिलाने की बहुत जरूरत थी। ज्ञानेश कुमार बचेगा, तब मोदी राज बचेगा। पर ज्ञानेश कुमार को बचाने के लिए जो-जो करना पड़ रहा था, उसका बचाव कैसे हो? बस यहीं इंदिरा गांधी वाली इमरजेंसी बड़े काम की साबित हो सकती थी। जो भी हो रहा है, वह इंदिरा गांधी की इमरजेंसी के मुकाबले गनीमत कैसे है?

लगे समझाने -- आपको जरूर कोई गलतफहमी हुई है। शायद स्वर्ग में आपलोगों तक सही जानकारियां नहीं पहुंच पा रही होंगी। वहां न गोदी चैनलों की पहुंच है, न वॉट्सऐप यूनिवर्सिटी की और न मीडिया सेल की। वरना कहां वो इमरजेंसी का असह्य दमन और कहां राष्ट्र को अराजकता से बचाने के हमारे शाह जी के विवेकपूर्ण कदम। राष्ट्र को आज अराजकता की साजिशों से बचाएंगे, तभी तो 2047 में विकसित भारत ला पाएंगे! आप भी कहां भारत-विरोधी ताकतों के प्रचार के बहकावे में आ रहे हैं!

पर समझाने से समझने के बजाय जेपी और भड़क गए -- इमरजेंसी लगाने के टैम पर इंदिरा भी यही भाषा तो बोलती थी -- भारत-विरोधी ताकतें, अराजकता की साजिश, विकास का रास्ता रोकने की कोशिश, वगैरह, वगैरह! इसी सब के नाम पर तब भी इमरजेंसी लगाई गई थी और तुम भी वही कर रहे हो। फर्क क्या है?

मोदी जी ने फिर भी समझाने की कोशिश जारी रखी -- इंदिरा गांधी की तानाशाही को आप कैसे भूल सकते हैं! वह तो विरोध को सहन ही नहीं कर सकती थीं। आपने विरोध किया, तो इमरजेंसी लगा दी।

जेपी ने टोका -- तुम तो बिना इमरजेंसी लगाए ही वही सब कर रहे हो!

अब मोदी जी के झल्लाने की बारी थी। फिर भी अपनी चिढ़ दबाकर बोले -- आप क्या कहते हैं, विरोधियों को चुनी हुई सरकार को पलट लेने दें? एक सौ चालीस करोड़ भारतीयों के आशीर्वाद को निष्फल हो जाने दें? विकसित भारत की ओर देश की प्रगति को रुक जाने दें? संसद की जगह सड़कों को देश को चलाने दें?

जेपी ने धीरे से कहा -- इंदिरा गांधी की सरकार भी चुनी हुई सरकार थी। तुम्हारे हिसाब से तो उसका विरोध भी गलत था। बिना चुनी हुई सरकार का विरोध तो हमेशा ही जायज है। पर चुनी हुई सरकार का विरोध डेमोक्रेसी की खास निशानी है।

मोदी जी समझ गए कि बुढ़ऊ समझाने से नहीं समझेंगे। और स्वर्गीय हैं, सो दूसरे तरीके काम करेंगे नहीं। ज्यादा टाइम वेस्टन कर के टीवी कार्यक्रम टाइप का क्विक फायर राउंड शुरू कर दिया।

मोदी -- इंदिरा गांधी ने इमरजेंसी में हजारों, लाखों, पता नहीं कितने विपक्षी नेताओं को जेलों में ठूंस दिया था?

जेपी -- तुमने भी तो दस हजार को गिरफ्तार तो किया ही है और वह भी सिर्फ जंतर-मंतर पर जमा होने से रोकने के लिए। सुना है, अमृत काल में लोग तिरंगा फहराने के लिए गिरफ्तार किए जा रहे हैं। सिर्फ गिरफ्तार ही नहीं, घायल भी किए जा रहे हैं। प्रदर्शन के लिए पहुंचने वालों को ही नहीं, जिनके प्रदर्शन में पहुंचने अंदेशा था, उन्हें भी उनके घरों से, ट्रेनों से, हवाई जहाजों तक से गिरफ्तार किया गया है।

मोदी -- इंदिरा गांधी ने जेलें कार्यकर्ताओं से भर दी थीं और जबरन सड़कें खाली करा दी थीं।

जेपी -- तुमने तो तरह-तरह की हवालातें बच्चों से भर दी हैं। हां! सड़कें फिर भी खाली नहीं करा पाए हो।

मोदी -- इंदिरा गांधी की इमरजेंसी में कदम-कदम पर पुलिस थी, पहरे थे।

जेपी -- तुम्हारी इमरजेंसी में राजधानी जैसे किले में तब्दील की गई है, इमरजेंसी में उसका तो पासंग भी नहीं था।

मोदी -- इमरजेंसी में जेलों में पुलिस ज्यादतियां होती थीं, जबरन नसबंदी थी।

जेपी -- तुम्हारी इमरजेंसी में तो सड़कों पर पुलिस ज्यादतियां हो रही हैं।

मोदी -- इंदिरा गांधी ने प्रेस पर सेंसरशिप थोप दी थी।

जेपी -- जो मीडिया पहले ही गोदी में नहीं बैठा था, उसे तुम्हारी इमरजेंसी में सड़कों पर घसीटा जा रहा है, हिरासत में लेकर पीटा जा रहा है। ऊपर से पहले इंटरनेट बंद और उसके बाद, डिजिटल सेंसरशिप भी।

मोदी -- कानून का राज खत्म हो गया था, अदालतों में भी सुनवाई नहीं थी।

जेपी -- कानून का राज खत्म है, अदालतों में आज भी सुनवाई नहीं है

मोदी -- इमरजेंसी में संजय गिरोह का मनमाना राज चलता था।

जेपी -- तुमने तो बाकायदा भगवा गुंडों को ताज सौंप दिया है, पुलिस को गुंडों के पीछे खड़ा कर दिया है।

पीएम ई-बस सेवा योजना के तहत 26 ई-बस सेवाओं का शुभारंभ

योजना के तहत कुल 400 ई-बसें होंगी शामिल; 9 और शहरों में शुरू होगी 'आम बस' सेवा

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा



भुवनेश्वर :ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने कहा कि वर्ष 2036 में ओडिशा एक अलग राज्य के रूप में अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे करेगा। इस अवसर को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार का प्रमुख लक्ष्य 500 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था के साथ एक समृद्ध ओडिशा का निर्माण करना है। इसके लिए राज्य में आधुनिक शहरी बुनियादी ढांचे और संस्थागत सुविधाओं का विकास किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री शनिवार को भुवनेश्वर में आयोजित नेशनल अर्बन कॉन्क्लेव-2026 में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि वर्तमान में ओडिशा में शहरीकरण का स्तर 17 प्रतिशत है, जिसे वर्ष 2036 तक बढ़ाकर 40 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा गया है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आधुनिक बुनियादी ढांचे और संस्थानों के निर्माण की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। सम्मेलन की मुख्य थीम 'द राइट टू वॉक' यानी 'चलने का अधिकार' पर जोर देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि शहरी परिवहन व्यवस्था में सुरक्षित फुटपाथ, पैदल यात्रियों के लिए सुरक्षित क्रॉसिंग और सार्वजनिक स्थानों की उचित योजना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

उन्होंने बताया कि वर्ष 2018 में 200 बसों के साथ शुरू हुआ कैपिटल रीजन अर्बन ट्रांसपोर्ट (CRUT) नेटवर्क आज 770 बसों तक पहुंच चुका है। इसके तहत 138 मार्गों पर सात शहरों को जोड़ा गया है और प्रतिदिन लगभग 3.5 लाख यात्री इस सेवा का लाभ उठा रहे हैं।मुख्यमंत्री ने पीएम ई-बस सेवा योजना के तहत 26 ई-बस सेवाओं का शुभारंभ किया। उन्होंने बताया कि योजना के अंतर्गत आगे 400 ई-बसों के साथ 100 मिडी और 50 मिनी ई-बसें भी शामिल की जाएंगी। वर्तमान में CRUT के माध्यम से सात शहरों में 'आम बस' सेवा संचालित हो रही है। नई ई-बसों के शामिल होने के बाद नौ और शहरों में यह सेवा शुरू की जाएगी। इनमें बारीपदा, अनुगुल, झारसुगुड़ा, बालेश्वर, जाजपुर, रायगढ़ा, जयपुर, भद्रक और बलांगीर शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि 'ओडिशा यात्री ऐप' के माध्यम से डिजिटल टिकटिंग की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है। इस ऐप के जरिए नौ लाख से अधिक बस यात्राएं दर्ज की गई हैं। चालकों को बिना किसी कमीशन के किराए की 100 प्रतिशत राशि प्राप्त हुई है, जिससे उन्हें कुल 12 करोड़ रुपये की आय हुई है।

कार्यक्रम में केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री तोखन साहू, ओडिशा के आवासन एवं नगर विकास मंत्री डॉ. कृष्ण चंद्र महापात्र, आवासन एवं नगर विकास विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव उषा पाढ़ी सहित केंद्र और राज्य सरकार के अनेक अधिकारी, शहरी विकास विशेषज्ञ तथा मीडिया प्रतिनिधि उपस्थित थे।

डायन बताकर पश्चिम सिंहभूम में 46 वर्षीया महिला की निर्मम हत्या

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , पश्चिम सिंहभूम जिले के कराईकेला थाना क्षेत्र के कोलजोमरो गांव में 46 वर्षीय महिला की कथित तौर पर लाठी-डंडों से पीटकर हत्या कर दी गई. महिला पर डायन होने का आरोप लगाए जाने की बात सामने आई है. मामले में पुलिस ने दो आरोपियों को हिरासत में लिया है, जबकि दो अन्य आरोपियों की तलाश जारी है. मृतका की पहचान हुई है.

बताया जाता है कि शुक्रवार की रात वह अपने घर में सो रही थीं. इसी दौरान चार आरोपी कथित तौर पर उनके घर में घुस आए और उन पर लाठी-डंडों से हमला कर दिया, हमले में महिला की मौत हो गई. इस वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए.

शनिवार सुबह परिजनों ने महिला का शव घर में पड़ा देखा. इसके बाद घटना की सूचना पुलिस को दी गई. महिला की हत्या की खबर फैलते ही गांव और आसपास के इलाके में चिंता का माहौल बन गया

घटना की जानकारी मिलने पर कराईकेला थाना प्रभारी प्यार हसन पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे. पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया.

इस मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी शुरू की. पुलिस की कार्रवाई के दौरान दो संदिग्ध आरोपियों को हिरासत में लिया गया है, उनसे पूछताछ की जा रही है. वहीं, घटना में कथित रूप से शामिल दो अन्य आरोपियों को पकड़ने के लिए संभावित ठिकानों पर छापेमारी की जा रही है

कराईकेला थाना प्रभारी प्यार हसन के नेतृत्व में पुलिस टीम मामले की जांच कर रही है. जानकारी के अनुसार, दो आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है और अन्य दो की तलाश जारी है.

झारखंड में प्रताड़ना का बदला हेतु महिला ने बेटे एवं अन्य एक को कुआं में फेंक कर मारा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , झारखंड के गोड्डा में दर्दनाक घटना सामने आई है। यहां अपने ससुरालवालों से बदला लेने के लिए एक मां ने दो कत्ल कर दिए। महिला ने अपनी कोख से जन्म लेने वाले बच्चे को भी नहीं छोड़ा। दोनों को कुएं में धक्का देकर मार डाला।

झारखंड के गोड्डा जिले में खौफनाक घटना सामने आई है। यहां ससुराल वालों द्वारा प्रताड़ित किए जाने का बदला लेने के लिए एक महिला ने अपने आठ साल के बेटे और एक रिश्तेदार के 11 साल के बच्चे को कुएं में धकेलकर उनकी हत्या कर दी। इस मामले में आरोपी राखी कुमारी को पुलिस ने उसके मायके से गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी राखी ने दोनों बच्चों की हत्या का जुर्म भी कबूल कर लिया है। उसने हत्या के पीछे की वजह भी बताई है।

मेला देखने गए थे दोनों बच्चे

इस मामले की जानकारी देते हुए पुलिस अधिकारियों ने बताया कि राखी कुमारी अपने पति विक्रम सिंह, बेटे अरब कुमार और रिश्तेदार के बच्चे आयुष कुमार के साथ 19 अक्टूबर को दुर्गा पूजा का मेला देखने दुमका गई थी। इसी दौरान महिला और दोनों बच्चे लापता हो गए। दुमका नगर थाने की प्रभारी प्रियंका आनंद ने बताया कि पाकुड़ जिले के निवासी विक्रम सिंह ने अगले दिन गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस ने जांच शुरू की तो उनका शक राखी पर गया। इस दौरान उसे हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की कड़ाई करने पर मामला खुल गया। पुलिस ने राखी गिरफ्तार कर लिया।

इस मामले की जानकारी देते हुए पोडियाहाट थाना प्रभारी महावीर पंडित ने बताया कि दोनों बच्चों के शव महिला के मायके के गांव के एक कुएं से बरामद किए गए। इसके बाद महिला को गिरफ्तार कर लिया गया। दुमका नगर थाना प्रभारी ने कहा कि पूछताछ के दौरान राखी ने बताया कि वह दोनों बच्चों को अपने मायके ले गई थी और वहां उसने उन्हें कुएं में धकेल दिया। उसने ऐसा अपने पति और ससुराल वालों से बदला लेने के लिए किया, क्योंकि वे उसे प्रताड़ित करते थे। यही वजह थी कि वो ससुराल वालों से बदला लेने के लिए दो बच्चों की हत्या कर दी।



25 साल से फरार चारा घोटाले को आरोपी गिरफ्तार, लाया जा रहा रांची

नेपाल में सत्येन्द्र का सीबीआई को मिल रहा था लोकेशन, हुआ लखनऊ से गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांचीः बिहार झारखंड एकीकृत राज्य के चारा घोटाला मामले में 25 साल से फरार चल रहे घोषित आरोपी सत्येंद्र कुमार को केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने आखिरकार गिरफ्तार कर लिया है. सीबीआई ने उसे उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के रेलवे स्टेशन से पकड़ा. आरोपी लंबे समय से जांच एजेंसी की गिरफ्त से बाहर था. उसकी गिरफ्तारी के बाद अब उसे ट्रांजिट रिमांड पर रांची लाया जा रहा है, जहां सक्षम न्यायालय में पेश किया जाएगा.

सीबीआई के द्वारा दी गईं जानकारी के अनुसार, इस मामले में वर्ष 2001 में आरोपपत्र दाखिल किया गया था. इसके बाद सत्येंद्र कुमार फरार हो गया और मुकदमे की सुनवाई के दौरान अदालत में पेश नहीं हुआ. लगातार अनुपस्थित रहने के कारण अदालत ने उसके खिलाफ गिरफ्तारी का स्थायी वारंट जारी किया था. इसके बाद से सीबीआई उसकी तलाश में जुटी थी.

सीबीआई ने आरोपी को पकड़ने के लिए लंबे समय तक तकनीकी निगरानी और अन्य माध्यमों से उसकी तलाश की. लगातार निगरानी और खुफिया सूचनाओं के आधार पर उसकी लोकेशन नेपाल में होने का पता चला. हाल ही में आरोपी भारत लौटा था.

जांच एजेंसी को सूचना मिली कि 22 अक्टूबर 2026 को सत्येंद्र कुमार मध्य प्रदेश के गुना से ट्रेन के जरिए लखनऊ जा रहा है. इसके बाद सीबीआई ने उसे गिरफ्तार करने के लिए विशेष टीम गठित की. टीम लखनऊ रेलवे स्टेशन पर ट्रेन पहुंचने से पहले ही तैनात हो गई. आधी रात के आसपास स्टेशन पर पहुंचने के बाद आरोपी को पकड़ लिया गया.

रांची की अदालत में होगी पेशी

सीबीआई के मुताबिक, सत्येंद्र कुमार को ट्रांजिट रिमांड पर रांची लाया जा रहा है. यहां उसे संबंधित अदालत में पेश किया जाएगा, ताकि चारा घोटाला मामले में उसके खिलाफ आगे की कानूनी कार्रवाई की जा सके.

आचार्यश्री विद्यासागर जी - वे संसार में रहे, पर संसार उनमें कभी नहीं रहा

[शरद की चाँदनी में तप का सूर्य — आचार्यश्री विद्यासागर जी]
[नमन से अनुकरण तक — आचार्यश्री के जीवन का शाश्वत संदेश]

• प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

शरद पूर्णिमा की चाँदनी एक प्रश्न छोड़ जाती है—क्या उज्ज्वल होना केवल चमकना है, या अपने त्याग से दूसरों का अंधकार हरना भी? 10 अक्टूबर 1946 की शरद पूर्णिमा की मध्यरात्रि में कर्नाटक के बेलगाँव ज़िले के सदलगा ग्राम में जन्मे विद्याधर ने अपने जीवन से इसका उत्तर दिया। वैभव के सम्मुख वैराग्य, स्वार्थ के सम्मुख परमार्थ और भौतिक उपलब्धियों के सम्मुख आत्मविजय को प्रतिष्ठित करते हुए वे दिगंबर जैनाचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज बने—जिनके व्यक्तित्व में चंद्रमा की शीतलता, हिमालय की ऊँचाई और महासागर की गहराई एकाकार थीं। शरद पूर्णिमा पर उनका स्मरण जन्मोत्सव भर नहीं, जीवन की कसौटी है—हमने कितना अर्जित किया, इससे नहीं; अपने होने से संसार को कितना समृद्ध किया, इससे हमारी सार्थकता तय होती है।

जब स्वार्थ संवेदना को निगलने लगे, तब संत का एक वाक्य भी पूरे युग का चरित्र उजागर कर देता है। आचार्यश्री कहते थे, "कौन दुःखी है, कौन सुखी है, आज इसकी बात नहीं होती, आज तो अपने स्वार्थ की बात होती है..." यह कथन समाज के अंतर्मन पर खड़ा वह प्रश्न है, जिससे मुँह मोड़ना आसान नहीं। भारतभूमि के प्रखर तपस्वी, आचार्य ज्ञानसागर के विद्याहंस, प्रभु महावीर के संदेशवाहक, अहिंसा के आराधक, अनियत विहारी, अध्यात्म-मर्मज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शब्द-शिल्पी, अनुपम मेधावी, सिद्धांतागम के पारगामी, अद्यावक वृत्ति के साधक, कवि, चिंतक और विश्ववंद्य राष्ट्रसंत—विशेषणों की पूरी माला भी उनके विराट व्यक्तित्व को परिभाषित करने में अधूरी पड़ जाती है। आठ से अधिक भाषाओं के ज्ञाता और अनेक धर्मशास्त्रों के रचयिता होते हुए भी उनकी सर्वोच्च उपलब्धि ज्ञान का विस्तार नहीं, उसका जीवन में साक्षात अवतरण था। उन्हें शब्दों में समेटना आकाश को मुट्ठी में बाँधने जैसा है—वे किसी एक परिचय के नहीं, समूची मानवता की करुणा के संत थे।

जिस घर में संस्कार संकल्प बन जाएँ, वहीं त्याग जीवन की दिशा बन जाता है। पिता श्री मल्लप्पा (मुनि मल्लिसागर) और माता श्रीमंती (आर्यिका समयमति) के घर जन्मे विद्याधर ने नौ वर्ष की आयु से ही धर्म के प्रति अनुराग दिखाया। कन्नड़ माध्यम से नवीं कक्षा तक शिक्षा के बाद उन्होंने सांसारिक आकर्षण त्याग आत्मकल्याण का मार्ग चुना। 30 जून 1968 को अजमेर में आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज (आचार्य शांतिसागर की परंपरा) से बाईस वर्ष की आयु में मुनि-दीक्षा लेकर वे विद्यासागर बने। 22 नवम्बर 1972 को नसीराबाद में आचार्य पद प्राप्त कर उन्होंने दिगंबर जैन संघ को नई दिशा दी। उनके तीन भाई—योगसागर, समयसागर और उत्कृष्टसागर—भी मुनि बने तथा माता-पिता ने भी संन्यास ग्रहण किया। एक परिवार का सामूहिक श्रमण-पथ पर चलना उस संस्कार-शक्ति का प्रमाण है, जहाँ त्याग शब्दों से नहीं, जीवन के निर्णयों से पीढ़ियों में उतरता है।

तप वह अग्नि है, जिसमें इच्छाएँ भस्म और आत्मबल कुंदन बनता है। आचार्यश्री का जीवन इसी तपसाधना का प्रतिमान था। अनियत विहार, कठोर तप, दीर्घ ध्यान और अयाचक वृत्ति उनकी साधना के आधार थे। घी, नमक, फल, दूध, घी, तेल और हरी सब्जियों सहित अनेक वस्तुओं का त्याग कर भी वे संतोषपूर्वक साधनारत रहे। पैदल विहार से उन्होंने देश के विभिन्न क्षेत्रों में धर्म का संदेश पहुँचाया। उनकी वाणी अहिंसा और आचरण समता का साक्षात रूप था। "पुरुषार्थ करो, अंतरंग सुधारो"—इस संदेश में उन्होंने आत्मपरिवर्तन का सूत्र दिया।

उनके मार्गदर्शन में बुंदेलखंड में शिक्षा, स्वास्थ्य, गौ-रक्षा और धार्मिक जागरण को प्रोत्साहन मिला। उनके सान्निध्य में सैकड़ों मुनि, आर्यिकाएँ, क्षुल्लक और ब्रह्मचारी दीक्षित हुए तथा दिगंबर मुनि-संघ का बड़ा हिस्सा उनकी शिष्य-परंपरा से जुड़ा। उनकी प्रेरणा से अनेक वैयावृत्य, स्वाध्यायशालाएँ, औषधालय और यात्री-निवास स्थापित हुए। इस तरह उनका धर्म आराधना तक सीमित नहीं रहा, बल्कि शिक्षा, सेवा और संस्कार बनकर समाज में प्रवाहित हुआ।

जिस लेखनी में आत्मबोध की दृष्टि हो, वह मिट्टी में महाकाव्य और मौन में दर्शन खोज लेती है। आचार्य विद्यासागर जी का साहित्य उनकी साधना का ही विस्तार था। संस्कृत की 'निरंजन शतक', 'भावना शतक', 'परीषह जय शतक', 'सुनीति शतक' और 'श्रमण शतक' जैन दर्शन की महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं। हिंदी महाकाव्य 'मूकमाटी' में उन्होंने मिट्टी के माध्यम से श्रम, साधना, रूपांतरण और जीवन-मूल्यों को गहन अभिव्यक्ति दी। 'नर्मदा का नरम कंकर', 'डूबो मत लगाओ डुबकी' और 'तोता क्यों रोता' जैसी रचनाओं में दार्शनिक चिंतन सहज भाषा में उतरा। संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, मराठी, कन्नड़ और अंग्रेजी सहित अनेक भाषाओं के ज्ञाता आचार्यश्री ने सैकड़ों लड़कू भी रचे। उनकी कृतियों पर शोध हुए और अनेक रचनाएँ विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल हुईं। उनकी लेखनी की विशिष्टता यह थी कि वह केवल विचार नहीं जगाती थी, पाठक को अपने ही अंतर्मन के सम्मुख खड़ा कर देती थी। महापुरुषों को जीवित रखने का सामर्थ्य स्मारकों में नहीं, उन मूल्यों में होता है, जिन्हें वे समाज को सौंप जाते हैं। शरद पूर्णिमा आचार्यश्री के जन्मस्मरण का पावन अवसर है, किंतु वे अपने सान्निध्य में जन्मदिन मनाने की परंपरा के पक्षधर नहीं थे। इसलिए अनुयायियों के लिए यह तिथि उत्सव से अधिक आत्मचिंतन का अवसर है।

जन विश्वास अधिनियम, 2026 के तहत रेलवे नियमों का प्रभावी अनुपालन सुनिश्चित कर रहा पूर्व तट रेलवे

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा

भुबनेश्वर : पूर्व तट रेलवे ने यात्री सुरक्षा, जनसुविधाओं, स्वच्छता और रेलवे परिसरों में जिम्मेदार व्यवहार सुनिश्चित करने के लिए जन विश्वास अधिनियम, 2026 के तहत रेलवे नियमों के अनुपालन को और मजबूत किया है। 19 जून 2026 से 20 अक्टूबर 2026 तक विभिन्न नियमों के उल्लंघन के मामलों में रेलवे अधिनियम, 1989 के संबंधित प्रावधानों के तहत 19,388 से अधिक लोगों से कुल 1,00,68,125 रुपये का जुर्माना वसूला गया है। जन विश्वास अधिनियम, 2026 के तहत रेलवे अधिनियम, 1989 की विभिन्न धाराओं में संशोधन किए गए हैं। संशोधित दंडात्मक प्रावधानों का उद्देश्य नियमों के पालन को प्रोत्साहित करना और जवाबदेही को मजबूत बनाना है। इन प्रावधानों को प्रभावी ढंग से लागू करके पूर्व तट रेलवे अवैध गतिविधियों पर अंकुश लगाने, रेलवे परिसरों में अनुशासन बनाए रखने और यात्रियों के हितों की रक्षा करने के लिए कदम उठा रहा है। इस अभियान के तहत अवैध रूप से फेरी लगाने और सामान बेचने, रेलवे परिसरों में अनधिकृत प्रवेश और वहां अनधिकृत रूप से ठहरने, रेलवे कर्मचारियों के वैध निर्देशों की अवहेलना करने, दूसरे व्यक्ति के नाम पर बुक टिकट पर अनधिकृत यात्रा करने तथा महिलाओं के लिए आरक्षित स्थानों में अनधिकृत प्रवेश जैसे विभिन्न उल्लंघनों के विरुद्ध कार्रवाई की गई है।

सबसे अधिक 14,992 लोगों के विरुद्ध यात्री क्षेत्रों में अनधिकृत प्रवेश, रेलवे परिसर के दुरुपयोग और परिसर खाली करने से इनकार करने से संबंधित मामलों में कार्रवाई की गई। इन मामलों में कुल 75,05,100 रुपये का जुर्माना वसूला गया। यह कार्रवाई रेलवे परिसरों को यात्रियों के लिए सुरक्षित, सुव्यवस्थित और सुविधाजनक बनाए रखने के लिए पूर्व तट रेलवे के निरंतर प्रयासों को दर्शाती है। रेलवे परिसरों में अवैध रूप से फेरी लगाने, सामान बेचने या ग्राहकों को आकर्षित करने के आरोप में 169 लोगों से कुल 3,27,500 रुपये का जुर्माना वसूला गया। इस कार्रवाई का उद्देश्य रेलवे परिसरों में यात्रियों की सुविधाएं बनाए रखना और अनधिकृत व्यावसायिक गतिविधियों पर रोक लगाना है। रेलवे परिसरों में वाहन चालकों और परिचालकों द्वारा उचित निर्देशों की अवहेलना करने के मामलों में 4,117 लोगों के विरुद्ध कार्रवाई की गई। इनसे कुल 20,58,200 रुपये का जुर्माना वसूला गया। रेलवे के अनुसार, इस कार्रवाई से परिसरों के भीतर वाहनों की आवाजाही सुचारु बनाने और यातायात अनुशासन बनाए रखने में मदद मिल रही है।

अन्य कार्रवाइयों के तहत यात्रियों के उपयोग के लिए आरक्षित नहीं किए गए डिब्बों में अनधिकृत प्रवेश से संबंधित 59 मामलों में 81,000 रुपये का जुर्माना वसूला गया। महिलाओं के लिए विशेष रूप से आरक्षित डिब्बों, बर्थ, सीटों या अन्य स्थानों में अवैध रूप से प्रवेश करने अथवा वहां ठहरने के आरोप में 13 लोगों से 31,500 रुपये का जुर्माना वसूला गया। इसी तरह, दूसरे व्यक्ति के नाम पर बुक टिकट पर बिना अनुमति यात्रा करने के आरोप में छह लोगों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए 3,000 रुपये का जुर्माना वसूला गया।रेलवे को धोखा देने के उद्देश्य से वैध टिकट या पास के बिना यात्रा करने अथवा ऐसी यात्रा का प्रयास करने के मामलों में 5,325 रुपये का जुर्माना वसूला गया।

रेलवे की ओर से प्रदर्शित सार्वजनिक सूचनाओं, बोर्डों या दस्तावेजों को अवैध रूप से हटाने अथवा जानबूझकर नष्ट करने के एक मामले में 2,000 रुपये का जुर्माना लगाया गया। इसके अलावा, ट्रेन के डिब्बों में इस तरह धूम्रपान करने, जिससे अन्य यात्रियों को परेशानी होती है, से संबंधित 28 मामलों में 54,500 रुपये का जुर्माना वसूला गया। पूर्व तट रेलवे ने कहा कि ये सभी कार्रवाइयां जन विश्वास अधिनियम, 2026 के तहत रेलवे अधिनियम, 1989 में किए गए संशोधनों के संबंधित प्रावधानों को प्रभावी ढंग से लागू करने की उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

इन पहलों का मुख्य उद्देश्य नियमों के अनुपालन को बढ़ावा देना, यात्रियों के अधिकारों की रक्षा करना, सार्वजनिक अनुशासन बनाए रखना और रेलवे सुविधाओं के जिम्मेदार उपयोग को सुनिश्चित करना है। पूर्व तट रेलवे ने यात्रियों और आम जनता से अपील की है कि वे वैध टिकट लेकर ही यात्रा करें, आरक्षित स्थानों से संबंधित नियमों का पालन करें, रेलवे पटरियों और परिसरों में अनधिकृत प्रवेश से बचें, अवैध व्यावसायिक गतिविधियों में शामिल न हों तथा रेलवे कर्मचारियों के वैध निर्देशों का पालन करें।



स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023